मंत्र : एक समाधान

आचार्य महाप्रज्ञ

मंत्र : एक समाधान

ॐ

जैन विश्व भारती प्रकाशन, लाडनूं

ॐ

मंत्र : एक समाधान

आचार्य महाप्रज्ञ

ॐ

प्रकाशक :
जैन विश्व भारती
लाडनूं ३४१३०६ (राज.)

सौजन्य :
'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' सज्जनदेवी हिरन की पुण्य स्मृति में
उनके पुत्र हरकचंद, मांगीलाल, सागरमल
पौत्रह्नभावेशकुमार हिरन।
द्वाराह्नहिलमिल डिटरजेन्टह्नडुंगरी, बलसाड (गुजरात)

© **जैन विश्व भारती**

संस्करण : २००६

मूल्य : सौ रुपये मात्र

मुद्रक :
श्री वर्धमान प्रेस
नवीन शहादरा, नई दिल्ली

MANTRA : EK SAMADHAN
Rs. 100.00 by Acharya Mahaprajna

प्रस्तुति

चेतना के दो रूप हैंह्व

१. इन्द्रिय-चेतना २. अतीन्द्रिय-चेतना।

पुद्‌गल के भी दो रूप हैंह्व

१. स्थूल २. सूक्ष्म।

मनुष्य इन्द्रिय-चेतना के द्वारा स्थूल का अवबोध करता है। उसकी शक्ति का स्रोत भी स्थूल है।

जिसे अतीन्द्रिय-चेतना की उपलब्धि हुई उसने सूक्ष्म सत्य को देखा। शक्ति की धारणा बदल गई। उसे पता चला कि सूक्ष्म में स्थूल से सैकड़ों-सैकड़ों गुना शक्ति अधिक है।

जैन दर्शन के अनुसार पुद्‌गल की सूक्ष्म वर्गणाएं पूरे लोक में व्याप्त हैं। उनमें एक वर्गणा का नाम है तैजस वर्गणा। प्रवृत्ति, प्रकाश, ध्वनिह्वये सब तैजस वर्गणा के रूप हैं। मंत्र शक्ति को समझने के लिए प्रकम्पन, परिणमन और आकारह्वइन तीनों का विमर्श आवश्यक है।

द्रव्य नित्य है और पर्याय अनित्य है। पर्याय के आधार पर नया सृजन होता है। एक व्यक्ति ने संकल्प किया। संकल्प और आकार रचना की मध्यवर्ती प्रक्रिया इस प्रकार हैह्व

१. संकल्प का क्षण २. एजन (कम्पन)

३. वेजन(विशिष्ट कंपन)
४. घट्टन (संचलन)
५. स्पन्दन
६. सूक्ष्मगति
७. परिणमन
८. संकल्प के अनुरूप आकार-रचना।

मंत्र शक्ति के तीन आयाम हैंह्न

१. संकल्पह्नदृढ़ निश्चय
२. ध्वनि-तरंग
३. भावना।

संकल्प

आकार-रचना के दो हेतु हैंह्नस्वभाव और प्रयत्न। सार्वभौम नियम के अनुसार प्रतिक्षण परिणमन हो रहा है। उसके आधार पर आकाशमंडल में सूक्ष्म आकृतियां निर्मित हो रही हैं। मनुष्य प्रयत्न के द्वारा परिणमन अथवा परिवर्तन करता है।

१. परिवर्तन का पहला चरण हैह्नकल्पना।
२. परिवर्तन का दूसरा चरण हैह्ननिश्चय।
३. परिवर्तन का तीसरा चरण हैह्नसंकल्पानुरूप प्रवृत्ति।

ध्वनि-तरंग

वक्ता के प्रयत्न दो प्रकार के होते हैंह्न

१. मंद
२. तीव्र।

मंद प्रयत्नवाले वक्ता के ध्वनि-प्रकम्पन लोक के

कुछ भागों तक फैलते हैं। तीव्र प्रयत्नवाले वक्ता के ध्वनि-प्रकम्पन लोक के पूरे भाग में फैलते हैं। प्रज्ञापना में इसका विशद उल्लेख है। वे प्रकम्पन आकाशमण्डल में भी परिवर्तन करते हैं और व्यक्ति को भी प्रभावित करते हैं। जप की साधना करने वाला व्यक्ति मंत्र का उच्चारण करता है। उस समय मंत्र की ध्वनि के प्रकम्पन साधक के स्थूल शरीर को प्रभावित करते हैं। मुख्यतया मेरुदण्ड (Spinal Cord) और मस्तिष्कीय न्यूरोन्स को प्रभावित करते हैं। ध्वनि-प्रकम्पन की तीव्रता बढ़ती है और बढ़ने के साथ-साथ वे सूक्ष्म शरीर को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार मंत्र-शक्ति के द्वारा रोग-मुक्ति, आदतों में परिवर्तन और आंतरिक विकास होता है। यदि मंत्र-जप का लक्ष्य कोई दूसरे व्यक्ति और घटना में परिवर्तन करना होता है तो ध्वनि-प्रकम्पन सुदूर प्रदेश में जाकर लक्ष्य के अनुरूप कार्य कर देते हैं। वैज्ञानिक युग में इस तथ्य पर संदेह नहीं किया जा सकता।

भावना

भावना ध्येय के साथ तादात्म्य स्थापित करने, तन्मय होने का प्रयोग है। हमारी संवित्ति चिन्तन और सुझाव से भावित होती है। जैसा चिन्तन और जैसा सुझाव (Suggestion or Auto Suggestion) होता है संवेदन उसी रूप में बदल जाता है।

योगवाशिष्ठ के अनुसार भावना के द्वारा असत्य सत्य बन जाता है। अमृत के संवेदन से विष अमृत बन जाता है। मैत्री के संवेदन से शत्रु मित्र बन जाता है, मधुर कटु बन जाता है, कटु मधुर बन जाता है।

यथा भावनमेतेषां पदार्थानां हि सत्यता।।

योगवाशिष्ठ ३/५६/३०

असत्यः सत्यतामेति पदार्थो भावनात्तथा।। ३/५६/३१

अमृतत्वं विषं याति सदैवामृतवेदनात्।

शत्रुर्मित्रत्वमायाति मित्रसंवित्तिवेदनात्।। ३/६०/१७

मधुरं कटुतामेति कटुभावेन चिन्तितम्।। ३/६०/२७

कटुतायाति माधुर्यं मधुरत्वेन चिन्तितम्।। ३/६०/२८

जैसे हरड़ में स्वभाव से ही विरेचन करने की शक्ति होती है वैसे ही भावना से य र ल व आदि वर्णों में चिन्तन के अनुरूप शक्ति पैदा हो जाती है।

यथा विरेकं कुर्वन्ति हरीतक्यः स्वभावतः।
भावनावशतः कार्यं यथा यरलवादयः।।

मंत्र जप की तीन अवस्थाएं हैंह्न

१. विकल्परूप (जल्पह्नउच्चारण)

२. संजल्परूप (अन्तर्जल्प)

३. निर्विकल्परूप (विमर्शरूप)।

विकल्परूप अवस्था में मंत्र का उच्चारण होता है।

संजल्परूप अवस्था में मंत्र का मानसिक उच्चारण होता है।

संजल्प के अभ्यास से मंत्र की अर्थभावना स्पष्ट होती है, अभेद प्रणिधान की पराकाष्ठा होने पर संजल्प रुक जाता है।

निर्विकल्परूप अवस्था में भाव्यमान वस्तु अथवा ध्येय का साक्षात्कार हो जाता है।

मंत्र-जप की विधि

एकांत पवित्र स्थान। पूर्व अथवा उत्तर दिशा, स्वच्छ आसन। सुखासन, पद्मासन, वज्रासन आदि किसी भी सुखद आसन का चुनाव। इस स्थिति के बाद मंत्र-जप का प्रारम्भ करें।

मंत्र-जप के समय मन को केन्द्रित करने के लिए अनेक चैतन्य केन्द्रों पर प्रयोग किया जाता है। जिन मंत्रों के लिए केन्द्र का निर्देश नहीं है उनके लिए सामान्य विधि यह हैह्न

मंत्र-जप के समय मन को नासिका के अग्रभाग पर केन्द्रित करें। नाक का संबंध पेरिनियम (मूलाधार) से होता है। नासाग्र पर ध्यान लगाने से प्रवृत्तियां नासाग्र से पेरिनियम तक चलती हैं। आंखों को स्थिर रखें। मन को नासाग्र पर केन्द्रित करें। श्वास के प्रति सजग रहें।

मंत्र का वीर्य प्रकट होने पर उसका फल मिलता है। मंत्र को वर्तमान बनाने के लिए तीन साधनों का निर्देश है। स्मरण, विचिन्तन, ध्यान के प्रयोग से मंत्र का वीर्य प्रकट हो जाता है। संक्षिप्त सार यह है कि मंत्र-जप और जप

ॐ

करने वाले में अभेद स्थापित होने पर मंत्र का वीर्य प्रकट हो जाता है। जिसका वीर्य प्रकट हो जाता है उसे मंत्र-शास्त्र में महामंत्र कहा जाता है। जब मंत्र और प्राण-शक्ति की एकता नाभिकेन्द्र (तैजस केन्द्र) में सिद्ध हो जाती है उस अवस्था में मंत्र-सिद्धि होती है।

मंत्र-वीर्य की सिद्धि के लिए दीर्घकाल तक निरन्तर भावपूर्वक अभ्यास करना आवश्यक है। इस अभ्यास प्रक्रिया से मंत्राक्षर के साथ तादात्म्य हो जाता है और मंत्र में फल देने की शक्ति पैदा हो जाती है।

मंत्र-जप से पूर्व चैतन्य केन्द्र का निर्धारण करें। उसमें सुनहरे प्रकाश से मंत्र का अक्षर लिखें, मंत्राक्षरों का उच्चारण करें और उन्हें देखते जाएं। मन उसमें लगा रहे।

चैतन्य के बिना मंत्र शक्तिशाली नहीं बनता। प्राणात्मक उच्चारण से एक अव्यक्त ध्वनि निरंतर प्रवाहित होती है। इसका नाम है अनहद नाद। मंत्र-जप की जब अनहद नाद की स्थिति बनती है उस अवस्था में मंत्र चैतन्य होता है। मंत्र-सिद्धि के लिए इसकी अनिवार्य अपेक्षा होती है। मंत्रशास्त्र में भौतिक सिद्धि को छः भागों में विभक्त किया गयाह

१. वशीकरण	२. स्तम्भन
३. सम्मोहन	४. उच्चाटन
५. विद्वेषण	६. मारण।

मंत्र का निर्माण और प्रयोग केवल भौतिक सिद्धि के लिए नहीं हुआ है। चेतना का जागरण भी उसका एक उद्देश्य है। जीवन में आने वाले विघ्नों और बाधाओं को दूर करने के लिए भी मंत्र का प्रयोग आवश्यक है। कार्य-सिद्धि के लिए पहले मंत्रों की साधना की जाती है। मंत्र के सिद्ध होने पर उनका अपेक्षा के अनुसार प्रयोग किया जा सकता है।

प्रस्तुत पुस्तक में हमने केवल इष्ट-सिद्धि में सहायक मंत्रों का संकलन किया है। इसमें अनिष्ट मंत्रों का समावेश नहीं किया है। हमारे सम्मुख अनेक-अनेक बार यह समस्या प्रस्तुत की जाती हैह्नअमुक ने मेरे व्यापार को कम करा दिया, अमुक ने परिवार में कलह पैदा करा दिया। इन समस्याओं से उत्पन्न पीड़ा को देखकर मैंने अनेक मंत्रविदों और तंत्रविदों से कहा कि वर्तमान की मानसिकता में धैर्य और गांभीर्य नहीं है इसलिए अनिष्ट करने वाले मंत्रों का प्रकाशन नहीं किया जाए तो जनता का अधिक हित होगा।

मंत्र की मूल शक्ति है ध्येय के साथ एकात्मक हो जाना। अभेद स्थापना में कुछ तत्त्व सहायक बनते हैंह्न

१. देश   २. काल   ३. जप

४. एकाग्रता   ५. श्वास।

देश और काल का अपना प्रभाव होता है। एक निश्चित समय तक जप्य मंत्र के लिए निश्चित देश

ॐ

(स्थान) और निश्चित काल की उपयोगिता होती है। आजीवन जप्य मंत्र के लिए इनकी अनिवार्यता नहीं होती।

मंत्र-सिद्धि के लिए तप भी अपेक्षित है। आहार-संयम और इन्द्रिय-संयमह्नये दोनों मंत्र साधना में बहुत सहयोगी बनते हैं। अतिमात्रा में भोजन और बहुसंख्या में भोज्य वस्तुओं का उपयोग न किया जाए तो साधना सरल बन जाती है।

एकाग्रता के बिना ध्येय के साथ तादात्म्य स्थापित नहीं हो सकता, इसलिए एकाग्रता को मंत्र-साधना का प्राण तत्त्व कहा जा सकता है।

एकाग्रता के लिए आवश्यक है इष्ट के प्रति अनुराग। जितनी सघन भक्ति होती है उतनी ही एकाग्रता होती है। यह जप का रहस्य है। किसी भी मंत्र का जप करने से पूर्व ध्येय के प्रति आकर्षण का निर्माण करना आवश्यक है।

एकाग्रता का एक प्रबल साधन है श्वास का आलम्बन। जप्य मंत्र को श्वास के साथ जोड़ने पर उसकी गुणात्मकता बढ़ जाती है। मंत्र-जप की सामान्य विधि यह है कि प्रारम्भ में उच्चारण करें। कुछ क्षणों के बाद उच्चारण में अंतराल देते जाएं, जैसेह्न

णमो अरहंताणं

णमो... अरहंताणं

णमो..... अरहंताणं

णमो....... अरहंताणं

इस अंतराल पद्धति से श्वास की लंबाई भी बढ़ती है और शब्द गौण हो जाते हैं, अर्थ मुख्य बन जाता है। मंत्र-साधना का रहस्य यही है कि वाचिक उच्चारण से जप्य मंत्र का प्रारम्भ करना और क्रमशः अर्थ तक पहुंच जाना। अर्थ के साथ तादात्म्य होने का अर्थ है मंत्र-सिद्धि।

हमारा जीवन द्वन्द्वात्मक है। संभवतः कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसके जीवन में द्वन्द्व न हो, समस्याएं न आएं। तनाव वर्तमान जीवन की सबसे बड़ी समस्या है। मंत्र का उपयोग इन सारी समस्याओं और तनावों से मुक्त रखता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपेक्षानुसार मंत्र का प्रयोग भी अवश्य करना चाहिए। मंत्र आध्यात्मिक जागरण में भी बहुत सहयोगी बनते हैं। इनका उपयोग केवल विघ्न-निवारण के लिए ही नहीं, आध्यात्मिक चेतना के जागरण के लिए भी किया जा सकता है।

प्रस्तुत पुस्तक 'मंत्र : एक समाधान' में ३६५ मंत्रों का संग्रह किया गया है। परिशिष्ट में कुछ स्तोत्रों का भी समावेश किया है। मंत्र साहित्य बहुत विशाल है। चौदह पूर्व ग्रंथों में एक पूर्व है विद्याप्रवाद। उसमें विद्याओं और मंत्रों का विस्तार से वर्णन किया गया है। वह वर्तमान में अनुपलब्ध है। उससे उद्धृत कुछ मंत्र उपलब्ध हैं।

ॐ

आचार्य हेमचन्द्र के अनुसार 'ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः' यह मंत्र विद्याप्रवाद से उद्धृत माना जाता है। हमने अनेक ग्रन्थों से मंत्रों का संग्रह किया है। मुनि मिलापचंदजी के द्वारा संकलित मंत्रों का भी उपयोग किया है।

मंत्र संग्रह की योजना और संपादन में साध्वी विश्रुतविभा और मुनि जयकुमार ने निष्ठापूर्ण श्रम किया है। प्रस्तुत पुस्तक के आकार की सारी प्रक्रिया मुनि धनंजय द्वारा सम्पादित है।

३१ दिसम्बर २००२ **ह्नआचार्य महाप्रज्ञ**
डूंगरी

ॐ

अनुक्रम

नमस्कार महामंत्र	२३
दिन का मंगल प्रारंभ	२४
दुर्लभ वस्तु की प्राप्ति	२५
सफलता	२६
संकल्प-सिद्धि	२७
एकाग्रता	२८
सौभाग्यवर्धक (१)	२९
सौभाग्यवर्धक (२)	३०
सौभाग्यवर्धक (३)	३१
यशवर्धक (१)	३२
यशवर्धक (२)	३३
वचनसिद्धि (१)	३४
वचनसिद्धि (२)	३५
वचनसिद्धि (३)	३६
वचनसिद्धि (४)	३७
वचनसिद्धि (५)	३८
अर्हत् की अर्हता	३९
कल्याणकर : इष्टसिद्धि	४०
सन्मति प्रदायक	४१
संपदा (१)	४२
संपदा (२)	४३
संपदा-वृद्धि	४४
सुख-संपदा-वृद्धि	४५
ऐश्वर्यदायक	४६
आध्यात्मिक संपदा (१)	४७
आध्यात्मिक संपदा (२)	४८
आध्यात्मिक संपदा (३)	४९
ऋद्धिवर्धक	५०
ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक	५१
समृद्धिवर्धक	५२
सद्बुद्धिदायक	५३
बुद्धिवर्धक (१)	५४
बुद्धिवर्धक (२)	५५
बुद्धिवर्धक (३)	५६
बुद्धिवर्धक (४)	५७
ज्ञान-वृद्धि	५८
ज्ञानदायक	५९
ज्ञान का विकास (१)	६०
ज्ञान का विकास (२)	६१
स्मृति का विकास (१)	६२
स्मृति का विकास (२)	६३
स्मृति का विकास (३)	६४

विद्या का विकास	६५	अभ्युदय	८९
विद्या-प्राप्ति	६६	अहं का विलय	९०
श्रुतज्ञान का विकास	६७	प्रसन्नता का हेतु	९१
बहुश्रुत (१)	६८	देवता की प्रसन्नता	९२
बहुश्रुत (२)	६९	मंगल भाव	९३
शास्त्र-ज्ञाता	७०	विधायक विचार	९४
बौद्धिक क्षमता का····(१)	७१	अशुभभाव निषेधक	९५
बौद्धिक क्षमता का····(२)	७२	भाव-विशुद्धि	९६
बौद्धिक क्षमता का····(३)	७३	सर्व शांतिदायक	९७
बौद्धिक क्षमता का····(४)	७४	शांति प्रदायक (१)	९८
बौद्धिक क्षमता का····(५)	७५	शांति प्रदायक (२)	९९
बौद्धिक क्षमता का····(६)	७६	शांति और सिद्धिदायक(१)	१००
शक्ति का विकास	७७	शांति और सिद्धिदायक(२)	१०१
कवित्व शक्ति	७८	मानसिक आह्लाद	१०२
कल्पनापूर्ति : इष्टसिद्धि	७९	मानसिक शांति (१)	१०३
प्रभावशाली व्यक्तित्व (१)	८०	मानसिक शांति (२)	१०४
प्रभावशाली व्यक्तित्व (२)	८१	मानसिक शांति (३)	१०५
प्रभाववर्धक	८२	मानसिक शांति (४)	१०६
प्रभावशाली वक्तृत्व (१)	८३	मानसिक शांति (५)	१०७
प्रभावशाली वक्तृत्व (२)	८४	मनोरथ-सिद्धि (१)	१०८
आनन्द प्रदायक	८५	मनोरथ-सिद्धि (२)	१०९
आनन्द की अनुभूति	८६	मनोवांछित कार्यसिद्धि(१)	११०
अन्तर्दृष्टि का विकास	८७	मनोवांछित कार्यसिद्धि(२)	१११
मैत्री का विकास	८८	मनोवांछित प्राप्ति	११२

ॐ

मनोकामना की संपूर्ति	११३
मनचिन्तित वस्तु की प्राप्ति	११४
मनोकामना-पूर्ति	११५
कामना-पूर्ति	११६
इष्ट-सिद्धि (१)	११७
इष्ट-सिद्धि (२)	११८
इष्ट-सिद्धि (३)	११९
इच्छापूर्ति (१)	१२०
इच्छापूर्ति (२)	१२१
इच्छापूर्ति (३)	१२२
इष्ट कार्य की सिद्धि	१२३
इष्ट फल-प्राप्ति	१२४
इष्ट व्यक्ति की प्राप्ति	१२५
अष्ट सिद्धि प्रदायक	१२६
अचिन्त्य फल-प्राप्ति	१२७
अनुकूलता-दायक	१२८
कार्यसिद्धि (१)	१२९
कार्यसिद्धि (२)	१३०
कार्यसिद्धि (३)	१३१
कार्यसिद्धि (४)	१३२
कार्यसिद्धि (५)	१३३
सर्व कार्य-साधक (१)	१३४
सर्व कार्य-साधक (२)	१३५
सर्व सिद्धि-दायक (१)	१३६
सर्व सिद्धि-दायक (२)	१३७
सर्व सिद्धि-दायक (३)	१३८
सर्व सिद्धि-दायक (४)	१३९
सर्व सिद्धि-दायक (५)	१४०
सिद्धि प्रदायक	१४१
ब्रह्मचर्य-विकास	१४२
ब्रह्मचर्य पालन की शक्ति	१४३
तेजस्विता	१४४
समाधि मृत्यु	१४५
इन्द्रिय-पाटव	१४६
राहु ग्रह (१)	१४७
राहु ग्रह (२)	१४८
गुरु ग्रह (१)	१४९
गुरु ग्रह (२)	१५०
गुरु ग्रह (३)	१५१
केतु ग्रह (१)	१५२
केतु ग्रह (२)	१५३
बुध ग्रह (१)	१५४
बुध ग्रह (२)	१५५
शनि ग्रह (१)	१५६
शनि ग्रह (२)	१५७
शनि ग्रह (३)	१५८
शुक्र ग्रह (१)	१५९
शुक्र ग्रह (२)	१६०

ॐ

सूर्य ग्रह (१)	१६१
सूर्य ग्रह (२)	१६२
मंगल ग्रह (१)	१६३
मंगल ग्रह (२)	१६४
मंगल ग्रह (३)	१६५
चन्द्र ग्रह (१)	१६६
चन्द्र ग्रह (२)	१६७
न्यास (१)	१६८
न्यास (२)	१६९
न्यास (३)	१७०
रक्षा-कवच (१)	१७१
रक्षा-कवच (२)	१७२
रक्षा-कवच (३)	१७३
रक्षा-कवच (४)	१७४
रक्षा-कवच (५)	१७५
रक्षा-कवच (६)	१७६
रक्षा-कवच (७)	१७७
रक्षा-कवच (८)	१७८
रक्षा-कवच (९)	१७९
शरीर-रक्षा कवच	१८०
अङ्ग-रक्षा	१८१
पारस्परिक सौहार्द	१८२
पारिवारिक शांति	१८३
परिवार में सम्मान	१८४
परिवार-रक्षा	१८५
उपद्रव शांति	१८६
उपद्रव निवारक	१८७
अरिष्टनाशक (१)	१८८
अरिष्टनाशक (२)	१८९
तांत्रिक उपद्रव का शमन	१९०
चिन्ताहरण (१)	१९१
चिन्ताहरण (२)	१९२
दुःखभंजक	१९३
विघ्न-बाधा निवारक (१)	१९४
विघ्न-बाधा निवारक (२)	१९५
विघ्नहरण	१९६
बाधा-निवारण	१९७
विघ्न निवारक (१)	१९८
विघ्न निवारक (२)	१९९
विघ्न निवारक (३)	२००
विघ्न निवारक (४)	२०१
विघ्न निवारक (५)	२०२
विघ्न निवारक (६)	२०३
संकट से मुक्ति	२०४
संकटमोचक (१)	२०५
संकटमोचक (२)	२०६
संघीय कष्ट निवारक	२०७
कुण्ठानाशक	२०८

ॐ

क्लेशनाशक (१)	२०९
क्लेशनाशक (२)	२१०
कलह-शमन	२११
राज्याभियोग-निवारण	२१२
व्यन्तरकृत उपद्रव शमन	२१३
व्यन्तर दोष निवारक	२१४
व्यन्तर बाधा निवारक	२१५
प्रेत बाधा-निवारण	२१६
भूत-प्रेत निवारक	२१७
भूत-प्रेत उपद्रव-निवारण	२१८
भूतादि उपद्रव-निवारण	२१९
भूतादि से रक्षा	२२०
तांत्रिक दोष और रोग-निवारण	२२१
बंदी मोक्ष	२२२
बंधनमुक्ति (१)	२२३
बंधनमुक्ति (२)	२२४
भयहर	२२५
भय निवारक	२२६
भयमुक्ति	२२७
अभय प्रदायक (१)	२२८
अभय प्रदायक (२)	२२९
भय और विरोध का शमन	२३०
अग्निभयनाशक	२३१
अग्निभय निवारक	२३२
सर्वभय निवारक	२३३
सिंह-भय निवारक	२३४
हस्तिमद निवारक	२३५
चोर-भय निवारक	२३६
मार्गवर्ती चोर-भय निवारक	२३७
चोरी के भय से मुक्ति	२३८
जल-उपद्रव-हरण	२३९
जल-भय निवारक	२४०
युद्ध-भय निवारक	२४१
यात्रा-बाधा निवारक	२४२
यात्रा-प्रस्थान	२४३
विजय (१)	२४४
विजय (२)	२४५
विजय (३)	२४६
विजय प्रदायक (१)	२४७
विजय प्रदायक (२)	२४८
विजय प्रदायक (३)	२४९
विजय-प्राप्ति	२५०
सर्वत्र विजय	२५१
शत्रु-विजय (१)	२५२
शत्रु-विजय (२)	२५३
शत्रु-विजय (३)	२५४
शत्रुनाशक	२५५
अपराभव	२५६

ॐ

वैर का समापन	२५७
स्तम्भन (१)	२५८
स्तम्भन (२)	२५९
उच्चाटन	२६०
वशीकरण (१)	२६१
वशीकरण (२)	२६२
क्षुद्र-मुख स्तम्भन	२६३
आकर्षण (१)	२६४
आकर्षण (२)	२६५
आकर्षण (३)	२६६
विवेक का विकास	२६७
कामण निवारक	२६८
चोर-स्तम्भन	२६९
राजकीय सम्मान	२७०
राज्य-सम्मान (१)	२७१
राज्य-सम्मान (२)	२७२
अपहृत व्यक्ति का पुनरागमन	२७३
खोई हुई वस्तु की प्राप्ति	२७४
अनुकूल स्थिति का निर्माण	२७५
स्वप्न में सूचना (१)	२७६
स्वप्न में सूचना (२)	२७७
स्वप्न में निर्देश	२७८
स्वप्न में उत्तर (१)	२७९
स्वप्न में उत्तर (२)	२८०
स्वप्नदोष-निवारण (१)	२८१
स्वप्नदोष-निवारण (२)	२८२
क्रोध-उपशमन (१)	२८३
क्रोध-उपशमन (२)	२८४
क्रोध-उपशमन (३)	२८५
आवेश-नियंत्रण	२८६
कामवृत्ति पर नियंत्रण	२८७
अनासक्ति का विकास	२८८
तनावमुक्ति	२८९
चिड़चिड़ापन से मुक्ति	२९०
उष्माशामक	२९१
अग्निशामक	२९२
दारिद्र्य-ताप-निवारण	२९३
रोग निवारक (१)	२९४
रोग निवारक (२)	२९५
आरोग्यवर्धक	२९६
आरोग्य (१)	२९७
आरोग्य (२)	२९८
आरोग्य (३)	२९९
आरोग्य (४)	३००
आरोग्य (५)	३०१
प्रतिरोधात्मक क्षमता	३०२
उपशम	३०३
शक्तिशाली नाड़ीतन्त्र	३०४

ॐ

ज्वरनाश (१) ३०५
ज्वरनाश (२) ३०६
ज्वरनाश (३) ३०७
ज्वरनाश (४) ३०८
रक्तचाप-संतुलन ३०९
सिरदर्द-चिकित्सा (१) ३१०
सिरदर्द-चिकित्सा (२) ३११
सिरदर्द-चिकित्सा (३) ३१२
मस्तिष्क-चिकित्सा ३१३
कर्ण-चिकित्सा ३१४
नेत्र-चिकित्सा (१) ३१५
नेत्र-चिकित्सा (२) ३१६
नेत्र-चिकित्सा (३) ३१७
नेत्र-चिकित्सा (४) ३१८
नेत्र-चिकित्सा (५) ३१९
दंत-चिकित्सा ३२०
हिचकी नाश ३२१
हिचकी, श्वास चिकित्सा ३२२
हृदय रोग-चिकित्सा ३२३
उदर-चिकित्सा (१) ३२४
उदर-चिकित्सा (२) ३२५
उदर-चिकित्सा (३) ३२६
उदर-चिकित्सा (४) ३२७
पाण्डु रोग-चिकित्सा ३२८
व्रण-चिकित्सा ३२९
चर्मरोग-चिकित्सा ३३०
रोग-निवारण ३३१
आधाशीशी चिकित्सा (१) ३३२
आधाशीशी चिकित्सा (२) ३३३
पाचन-तंत्र का संतुलन ३३४
व्रणहर ३३५
मलेरिया ज्वर-नाशक ३३६
नजर उतारना ३३७
सर्वरोग-चिकित्सा (१) ३३८
सर्वरोग-चिकित्सा (२) ३३९
सर्वव्याधि-चिकित्सा ३४०
अनिद्रा-निवारण ३४१
अनिद्रा-निवारण कार्यसिद्धि ३४२
औषध की शक्ति का संवर्धन ३४३
दंश-प्रतिकार ३४४
विषनाशक (१) ३४५
विषनाशक (२) ३४६
विषनाशक (३) ३४७
विषनाशक (४) ३४८
विषनाशक (५) ३४९
सर्प-विष-निवारक (१) ३५०
सर्प-विष-निवारक (२) ३५१
श्वानविष-निवारक (१) ३५२

श्वानविष-निवारक (२)	३५३
वृश्चिक-विष-निवारक	३५४
जंगम विष का शमन	३५५
दृष्टिज्वर का विलय	३५६
दृष्टि दोष-निवारक (१)	३५७
दृष्टि दोष-निवारक (२)	३५८
दर्शन शक्ति	३५९
सूक्ष्म स्पर्श का अनुभव	३६०
दिव्य सुरभि का अनुभव	३६१
ग्राम-प्रवेश (१)	३६२
ग्राम-प्रवेश (२)	३६३
मंत्र-साक्षात्कार..... (१)	३६४
मंत्र साक्षात्कार..... (२)	३६५
मंत्र साक्षात्कार..... (३)	३६६
मंत्र साक्षात्कार..... (४)	३६७
मंत्र साक्षात्कार..... (५)	३६८
मंत्र-सिद्धि का लक्षण(१)	३६९
मंत्र-सिद्धि का लक्षण(२)	३७०
एकम (प्रतिपदा)	३७१
द्वितीया	३७२
तृतीया	३७३
चतुर्थी	३७४
पंचमी	३७५
षष्ठी	३७६
सप्तमी	३७७
अष्टमी	३७८
नवमी	३७९
दशमी	३८०
एकादशी	३८१
द्वादशी	३८२
त्रयोदशी	३८३
चतुर्दशी	३८४
पूर्णिमा	३८५
अमावस्या	३८६
मंगल करण	३८७
परिशिष्ट-१	
उवसग्गहर स्तोत्र	३८८
वज्रपंजर स्तोत्र	३८९
नव ग्रह निवारण पार्श्व....	३९०
श्रीमंत्राधिराज स्तोत्र	३९१
चैत्य पुरुष जग जाए	३९२
भिक्षु-स्मृति	३९३
विघ्न हरण	३९४
मुणिन्द मोरा	३९८
चैतन्य केन्द्र	४०२
परिशिष्ट-२	४०३

ॐ

नमस्कार महामंत्र

अर्हता, सिद्धि, आचार, ज्ञान और साधनाह्वये जीवन के पांच आयाम हैं।

नमस्कार महामंत्र इनके विकास का सर्वोत्तम साधन है।

णमो अरहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।

परिणाम

सर्वतोभद्र, सर्वतोविकास, सर्वतः कल्याण।

१ जनवरी
२००२

दिन का मंगल प्रारम्भ

१. मंत्र

सिद्धा।

२. मंत्र संख्या

एक श्वास में २१ बार अथवा ३२ बार।

३. प्रयोग विधि

सूर्योदय के समय मंत्र का प्रयोग करें।

४. परिणाम

(१) मंगलमय वातारण।

(२) इष्ट-सिद्धि।

२ जनवरी
२००२

ॐ

दुर्लभ वस्तु की प्राप्ति

१. मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं संभवनाथाय नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

नई वस्तु की उत्पत्ति, प्राप्ति, जैसे जल आदि।

३ जनवरी
२००२

सफलता

१. मंत्र

भक्तामर प्रणत-मौलिमणि-प्रभाणा-
मुद्योतकं दलित-पाप-तमोवितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा-
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम्।।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन एक माला।

३. परिणाम

प्रत्येक क्षेत्र में लाभ, सफलता और सम्पदा की प्राप्ति।

४ जनवरी
२००२

ॐ

संकल्प-सिद्धि

१. समस्या

संकल्प की दुर्बलता।

२. समाधान

चैतन्यकेन्द्र पर मंत्र का जप।

३. मंत्र

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं।

४. चैतन्यकेन्द्र

दर्शनकेन्द्र।

५. प्रयोग विधि

दर्शनकेन्द्र पर ध्यान केन्द्रित कर दीर्घश्वास का प्रयोग करें। मंत्र का मंद उच्चारण अथवा मानसिक जप करें।

६. कालमान

५ मिनिट से ३० मिनिट तक।

७. परिणाम

संकल्प की दृढ़ता का विकास होता है।

५ जनवरी
२००२

एकाग्रता

१. मंत्र

अ सि आ उ सा।

२. प्रयोग विधि

अ	ह्न	नाभि
सि	ह्न	मस्तक
आ	ह्न	कण्ठ
उ	ह्न	हृदय
सा	ह्न	मुख

३. कालमान

प्रारंभ में ९ आवृत्ति करें । धीरे-धीरे अभ्यास कर प्रतिदिन १०८ आवृत्ति करें।

४. परिणाम

एकाग्रता की सिद्धि और विघ्न-बाधा निवारण।

६ जनवरी
२००२

ॐ

सौभाग्यवर्धक (१)

१. समस्या

रोग, सौभाग्य की कमी और आपदा।

२. मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं ॐ णमो सिद्धाणं ॐ णमो आयरियाणं ॐ णमो उवज्झायाणं ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः स्वाहा।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. परिणाम

सर्व रोग-नाश, यश और सौभाग्य की वृद्धि, लक्ष्मी अथवा सम्पदा की वृद्धि।

७ जनवरी
२००२

ॐ

सौभाग्यवर्धक (२)

१. मंत्र

ॐ अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय सर्ववश्यं मानय मानय स्वाहा।

२. प्रयोग विधि

२१ बार मंत्र जप कर मुंह पर हाथ फेरें।

३. परिणाम

सौभाग्य की वृद्धि होती है।

८ जनवरी
२००२

ॐ

सौभाग्यवर्धक (३)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं पद्मप्रभवे नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

सौभाग्य की वृद्धि होती है।

९ जनवरी
२००२

ॐ

यशवर्धक (१)

१. मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं ॐ णमो सिद्धाणं ॐ णमो आयरियाणं ॐ णमो उवज्झायाणं ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रं ह्रः नमः स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

मंत्र का सवा लाख जप कर उसे सिद्ध करें।

४. परिणाम

यश प्राप्त होता है। आरोग्य बढ़ता है।

१० जनवरी
२००२

यशवर्धक (२)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं ऐं आं।

चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।

मम मनोवांच्छितं पूरय पूरय स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

१००० बार।

३. परिणाम

मन-चिन्तित कार्य होता है। यश, प्रतिष्ठा प्राप्त होते हैं।

११ जनवरी
२००२

वचनसिद्धि (१)

१. मंत्र

ॐ णमो जिणाणं ॐ णमो वड्ढमाणरसीणं नमः मम बुद्धिरस्तु झौं झौं स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

इससे वचनसिद्धि होती है।

१२ जनवरी
२००२

वचनसिद्धि (२)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अ सि आ उ सा चुलु चुलु कुलु कुलु मुलु मुलु इच्छियं वाग्सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

६ महीने तक अजपाजप का प्रयोग करें।

४. परिणाम

जो कहते हैं वही हो जाता है।

१३ जनवरी
२००२

वचनसिद्धि (३)

१. मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वद वद वाग्वादिनी भगवती सरस्वती ह्रीं नमः।

२. प्रयोग विधि

छः महीने में सवा लाख का जप कर मंत्र को सिद्ध करें।

३. परिणाम

वचनसिद्धि प्राप्त होती है।

१४ जनवरी
२००२

ॐ

वचनसिद्धि (४)

१. मंत्र

ॐ शांति।

२. मंत्र संख्या

दिन में ३ बार ३-३ घंटा।

३. प्रयोग विधि

६ मास तक नियमित करें। भोजन में श्वेत वस्तुओं का प्रयोग करें।

४. परिणाम

वचनसिद्धि प्राप्त होती है।

१५ जनवरी
२००२

वचनसिद्धि (५)

१. मंत्र

ॐ ऐं ह्रौं झां झीं।

सुविहिं च पुप्फदंतं सीयलसिज्जंस वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं धम्मं संतिं च वंदामि।।

स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

१२११ बार।

३. परिणाम

शत्रु का भय दूर होता है। राज्य में महत्त्व बढ़ता है, प्रतिष्ठा बढ़ती है। जो कहते हैं वही होता है।

१६ जनवरी
२००२

अर्हत् की अर्हता

१. मंत्र

ॐ अर्हं अ सि आ उ सा णमो अरहंताणं नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

चित्त को आनन्द केन्द्र पर केन्द्रित कर जप करें।

४. परिणाम

कल्याणकारी वातावरण का निर्माण होता है। मोक्ष-साधना की सिद्धि प्राप्त होती है।

१७ जनवरी
२००२

ॐ

कल्याणकर : इष्टसिद्धि

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्डस्वामिने नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

विघ्न का निवारण और कल्याण का प्रवर्तन होता है। प्रयोजन सिद्ध होते हैं।

१८ जनवरी
२००२

सन्मति प्रदायक

१. समस्या

मति जाड्य।

२. मंत्र

सुमति जिनेश्वर साहिब शोभता
सुमति करण संसार।
सुमति जप्यां थी सुमति बधै घणी
सुमति सुमति-दातार।।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. परिणाम

चिन्तन सम्यक् बनता है।

१६ जनवरी
२००२

ॐ

संपदा (१)

१. समस्या

अभाव।

२. मंत्र

अरिहंतसिद्धआयरियउवज्झायसव्वसाहूणं।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. परिणाम

संपदा की प्राप्ति।

२० जनवरी
२००२

ॐ

सम्पदा (२)

१. समस्या

भौतिक उलझन।

२. मंत्र

हो प्रभु! लीन पणै तुम ध्यावियां
पामै इन्द्रादिक नीं ॠद्धि हो
बलि विविध भोग सुख सम्पदा
लहै आमोसही आदि लब्धि हो।।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. परिणाम

ऐहिक और पारलौकिक सम्पदा प्राप्त करता है।

२१ जनवरी
२००२

सम्पदा-वृद्धि

१. मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रौं नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

संपदा की वृद्धि होती है, यश बढ़ता है।

२२ जनवरी
२००२

सुख-सम्पदा-वृद्धि

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं ऐं

लोगस्स उज्जोयगरे धम्म तित्थयरे जिणे।
अरहंते कित्तइस्सं चउवीसंपि केवली।।
मम मनोऽभीष्टं कुरु कुरु ॐ स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

१ माला।

३. प्रयोग विधि

पूर्व दिशा की ओर मुख करके खड़ा रहकर १०८ बार कायोत्सर्ग में मंत्र का जप करें। १४ दिन तक एकांत में रहें। ब्रह्मचर्य का पालन करें।

४. परिणाम

राज्य में सम्मान प्राप्त होता है। चोरों का भय नहीं रहता। सुख की वृद्धि होती है।

२३ जनवरी
२००२

ऐश्वर्यदायक

१. मंत्र

ॐ ह्रीं वरे सुवरे अ सि आ उ सा नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

तीन सन्ध्या में जप करें।

४. परिणाम

पदोन्नति होती है।

२४ जनवरी
२००२

ॐ

आध्यात्मिक संपदा (१)

१. मंत्र

ऐं णमो लोए सव्वसाहूणं ऐं णमो उवज्झायाणं ऐं णमो आयरियाणं ऐं णमो सिद्धाणं ऐं णमो अरहंताणं।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

सौभाग्य-वृद्धि, ऐश्वर्य-वृद्धि।

२५ जनवरी
२००२

आध्यात्मिक संपदा (२)

१. मंत्र

उन्निद्रहेम-नवपंकजपुञ्जकान्ती
पर्युल्लसन् नखमयूखशिखाभिरामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति।।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

आध्यात्मिक लक्ष्मी का वरण होता है।

२६ जनवरी
२००२

आध्यात्मिक संपदा (३)

१. मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं ॐ णमो सिद्धाणं ॐ णमो आयरियाणं ॐ णमो उवज्झायाणं ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

मंत्र-सिद्धि के लिए पुष्य नक्षत्र में पीली माला, पीला आसन और पीले वस्त्र धारण कर एकांत में सवा लाख का जप करें। जप काल में एकासन करें। भूमिशयन, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन।

४. परिणाम

ऐश्वर्य-वृद्धि।

२७ जनवरी
२००२

ॐ

ऋद्धिवर्धक

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं महावीराय नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

आध्यात्मिक ऋद्धि का विकास होता है।

२८ जनवरी
२००२

ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक

१. मंत्र

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं मम ऋद्धिं वृद्धिं समीहितं कुरु कुरु स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

त्रिसन्ध्या में २१ बार।

३. परिणाम

ऋद्धि-सिद्धि की प्राप्ति होती है।

२६ जनवरी
२००२

ॐ

समृद्धिवर्धक

१. मंत्र

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं सिद्धाणं आयरियाणं उवज्झायाणं साहूणं मम ऋद्धिं वृद्धिं समीहितं कुरु कुरु स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

त्रिसन्ध्या में ३२ बार।

३. प्रयोग विधि

२१ दिन तक १० माला फेरें।

४. परिणाम

सुख-समृद्धि की प्राप्ति।

३० जनवरी
२००२

ॐ

सद्बुद्धिदायक

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सुमतिनाथाय नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

सद्बुद्धि की प्राप्ति होती है।

३१ जनवरी
२००२

ॐ

बुद्धिवर्धक (१)

१. समस्या

बुद्धि की मंदता।

२. मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं वद वद वाग्वादिनी स्वाहा।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. प्रयोग विधि

सवा लाख का जप कर मंत्र सिद्ध करें।

५. परिणाम

स्मरणशक्ति बढ़ती है।

१ फरवरी
२००२

बुद्धिवर्धक (२)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सुविधिनाथाय नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

बुद्धि (मेधा) का विकास होता है।

२ फरवरी
२००२

बुद्धिवर्धक (३)

१. मंत्र

सम्पूर्ण मण्डल शशांक-कलाकलाप-
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयंति।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर-नाथमेकं
कस्तान् निवारयति संचरतो यथेष्टम्।।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

आधि-व्याधि समाप्त होती है। सरस्वती प्रसन्न होती है।

३ फरवरी
२००२

ॐ

बुद्धिवर्धक (४)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं वाग्वादिनी भगवती अर्हन्मुखनिवासिनी सरस्वती ममास्ये प्रकाशं कुरु कुरु स्वाहा ऐं नमः।

२. प्रयोग विधि

दीपावली के दिन रात्रि में उत्तराभिमुख होकर १२००० का जप करें।

३. परिणाम

बुद्धि का विकास होता है, जड़ता दूर होती है।

४ फरवरी
२००२

ॐ

ज्ञान-वृद्धि

१. मंत्र

ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं।

२. प्रयोग विधि

रसनेन्द्रिय पर मंत्र की स्थापना करें। फिर मंत्र का साक्षात्कार करें।

३. परिणाम

ज्ञान का विकास।

५ फरवरी
२००२

ॐ

ज्ञानदायक

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं विमलनाथाय नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

ज्ञान का विकास होता है, ज्ञान निर्मल होता है।

६ फरवरी
२००२

ज्ञान का विकास (१)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं चउदसपुव्वीणं ॐ ह्रीं पयाणुसारीणं ॐ ह्रीं एगारसंगधारीणं ॐ ह्रीं उज्जुमईणं ॐ ह्रीं विउलमईणं नमः स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

सफेद वस्त्र पहन कर स्फटिक की माला से जप करें।

४. परिणाम

बुद्धि का विकास होता है।

७ फरवरी
२००२

ॐ

ज्ञान का विकास (२)

१. समस्या

ज्ञान का अवरोध।

२. मंत्र

ॐ ह्रीं ह्रौं णमो उवज्झायाणं।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन एक माला।

४. परिणाम

बौद्धिक और आन्तरिक ज्ञान का विकास।

८ फरवरी
२००२

ॐ

स्मृति का विकास (१)

१. मंत्र

ॐ ऐं क्लीं।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

स्मृति का विकास होता है। संघर्ष, विवाद और झगड़े में विजय होती है। विरोधी भी आकृष्ट हो जाता है।

६ फरवरी
२००२

ॐ

स्मृति का विकास (२)

१. समस्या

स्मृति दौर्बल्य और चयापचय का असंतुलन।

२. समाधान

चैतन्य केन्द्र पर पीले रंग का ध्यान।

३. जप मंत्र

ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं।

४. चैतन्य केन्द्र

विशुद्धि केन्द्र।

५. प्रयोग विधि

विशुद्धि केन्द्र पर ध्यान केन्द्रित करें। मंत्र का मंद उच्चारण अथवा मानसिक जप करें।

६. कालमान

५ मिनिट से ३० मिनिट तक।

७. परिणाम

स्मृति का विकास, चयापचय का संतुलन होता है।

१० फरवरी
२००२

स्मृति का विकास (३)

१. मंत्र

ॐ नमो बोहिबुद्धाणं जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय स्वाहा ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

५२ दिन तक जप का प्रयोग करें।

४. परिणाम

स्मृति विकास, बौद्धिक विकास होता है।

११ फरवरी
२००२

ॐ

विद्या का विकास

१. मंत्र

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम्।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चारु-चाम्र-कलिका-निकरैकहेतुः।।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

विद्या का विकास होता है और वाणी के दोष दूर होते हैं।

१२ फरवरी
२००२

विद्या-प्राप्ति

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अनन्तनाथाय नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

विद्या की प्राप्ति होती है।

१३ फरवरी
२००२

ॐ

श्रुत ज्ञान का विकास

१. मंत्र

अर्हं।

२. मंत्र संख्या

१० मिनिट से ३० मिनिट तक ध्यान।

३. प्रयोग विधि

इस मंत्र का मेरुदंड पर ध्यान करें।

४. परिणाम

समस्त श्रुतार्थ का प्रवक्ता।

१४ फरवरी
२००२

बहुश्रुत (१)

१. मंत्र

ॐ नमो चउदसपुव्वीणं जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय स्वाहा ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

ज्ञान केन्द्र पर ध्यान केन्द्रित कर जप का प्रयोग करें।

४. परिणाम

अंगश्रुत की वाचना में प्रवीण बनता है।

१५ फरवरी
२००२

बहुश्रुत (२)

१. मंत्र

ॐ नमो सयसंबुद्धाणं जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय स्वाहा ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

ज्ञान केन्द्र पर ध्यान केन्द्रित कर जप का प्रयोग करें।

४. परिणाम

बौद्धिक विकास।

१६ फरवरी
२००२

शास्त्र-ज्ञाता

१. मंत्र

ॐ णमो दसपुव्वीणं झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

२. प्रयोग विधि

८० दिन तक निरन्तर १ माला। एकान्तर उपवास।

३. परिणाम

शास्त्रविद हो जाता है। महामूर्ख भी विद्वान् बन जाता है।

१७ फरवरी
२००२

बौद्धिक क्षमता का विकास (१)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं वद वाग्वादिनि! भगवति! सरस्वती श्रुतदेवी! मम जाड्यं हर हर स्वाहा श्री भगवत्यै नमः स्वाहा ठः ठः ठः स्वाहा।

२. प्रयोग विधि

तीन मास तक प्रतिदिन एक माला।

३. परिणाम

बुद्धि की जड़ता मिटती है।

१८ फरवरी
२००२

बौद्धिक क्षमता का विकास (२)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं वाग्वादिनि सरस्वति! मम जिह्वाग्रे वासं कुरु कुरु स्वाहा।

२. प्रयोग विधि

२९ दिन तक प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

विद्या का विकास होता है।

१९ फरवरी
२००२

ॐ

बौद्धिक क्षमता का विकास (३)

१. मंत्र

ऐं नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १० माला।

३. प्रयोग विधि

त्रिसन्ध्या में १०-१० माला का जप करें।

४. परिणाम

बौद्धिक क्षमता का विकास होता है।

२० फरवरी
२००२

बौद्धिक क्षमता का विकास (४)

१. मंत्र

ॐ ऐं श्रीं सौं क्लीं वद वद वाग्वादिनी ह्रीं सरस्वत्यै नमः ।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

मंत्र का जप प्रातःकाल करें।

४. परिणाम

विशिष्ट बौद्धिक क्षमता का विकास होता है।

२१ फरवरी
२००२

ॐ

बौद्धिक क्षमता का विकास (५)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

ज्ञान का विकास होता है।

२२ फरवरी
२००२

बौद्धिक क्षमता का विकास (६)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्वीं स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

विद्या का विकास होता है।

२३ फरवरी
२००२

शक्ति का विकास

१. समस्या

निराशा।

२. मंत्र

अनन्तवीर्येभ्यो नमः।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. प्रयोग विधि

तैजस केन्द्र पर अरुण रंग का ध्यान कर जप का अभ्यास करें।

५. परिणाम

निराशा समाप्त होती है, शक्ति का विकास होता है।

२४ फरवरी
२००२

ॐ

कवित्व शक्ति

१. मंत्र

ॐ ऐं हं ऐं हं वद वद स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

१० हजार जप कर मंत्र सिद्ध करें।

४. परिणाम

कवित्व शक्ति का जागरण होता है।

२५ फरवरी
२००२

कल्पना पूर्ति : इष्टसिद्धि

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

मंत्र का सवा लाख जप कर सिद्ध करें।

४. परिणाम

कल्पना सचाई में परिणत हो जाती है। मानसिक शांति, कर्म विपाक का मंदीकरण और इष्टसिद्धि होती है।

२६ फरवरी
२००२

ॐ

प्रभावशाली व्यक्तित्व (१)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं चन्द्रप्रभवे नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

प्रभावशाली व्यक्तित्व का निर्माण।

२७ फरवरी
२००२

प्रभावशाली व्यक्तित्व (२)

१. मंत्र

जय जश कर जगदीश।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

व्यक्तित्व का विकास होता है और वह प्रभावशाली बनता है।

२८ फरवरी
२००२

प्रभाववर्धक

१. मंत्र

ॐ ह्रीं त्रैलोक्याधीशजिनाय नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन २१ बार।

३. प्रयोग विधि

१२ हजार का जप कर मंत्र सिद्ध करें।

४. परिणाम

व्यापक प्रभाव।

१ मार्च
२००२

प्रभावशाली वक्तृत्व (१)

१. मंत्र

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं ह्रं सौ नमः।

२. मंत्र संख्या

२१ बार।

३. प्रयोग विधि

व्याख्यान से पूर्व मंत्र का जप करें।

४. परिणाम

व्याख्यान के प्रति आकर्षण बना रहता है।

२ मार्च
२००२

प्रभावशाली वक्तृत्व (२)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कलिकुंड दंड स्वामिनी अप्रतिचक्रे जये विजये अजिते अपराजिते जंभे स्तंभे मोहे स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

२१ बार।

३. प्रयोग विधि

व्याख्यान प्रारम्भ करने से पहले मंत्र का मानसिक उच्चारण करें।

४. परिणाम

व्याख्यान प्रभावशाली बनता है।

३ मार्च
२००२

ॐ

आनन्द प्रदायक

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अभिनन्दननाथाय नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

चारों ओर से आनन्द की प्राप्ति होती है।

४ मार्च
२००२

ॐ

आनन्द की अनुभूति

१. समस्या

विजातीय द्रव्य (Foreign Matter) का संचय।

२. समाधान

चैतन्य केन्द्र पर हरे रंग का ध्यान ।

३. मंत्र

ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं ।

४. चैतन्य केन्द्र

आनन्द केन्द्र ।

५. प्रयोग विधि

आनन्द केन्द्र पर ध्यान केन्द्रित कर दीर्घश्वास का प्रयोग करें। मंत्र का मंद उच्चारण अथवा मानसिक जप करें।

६. कालमान

५ मिनिट से ३० मिनिट तक।

७. परिणाम

आनन्द की अनुभूति होती है।

५ मार्च
२००२

ॐ

अन्तर्दृष्टि का विकास

१. समस्या

इन्द्रिय-चेतना में अतिरिक्त विश्वास।

२. समाधान

चैतन्य केन्द्र पर अरुण रंग का ध्यान।

३. मंत्र

ऊँ ह्रीं णमो सिद्धाणं ।

४. चैतन्य केन्द्र

दर्शन केन्द्र।

५. प्रयोग विधि

दर्शन केन्द्र पर ध्यान केन्द्रित कर दीर्घश्वास का प्रयोग करें। मंत्र का मंद उच्चारण अथवा मानसिक जप करें।

६. कालमान

५ मिनिट से ३० मिनिट तक।

७. परिणाम

अन्तर्दृष्टि (Third Eye) का विकास होता है।

६ मार्च
२००२

मैत्री का विकास

१. समस्या

मित्रता का अभाव।

२. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अमुकं दुष्टं साधय साधय अ सि आ उ सा नमः।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. प्रयोग विधि

जिस व्यक्ति के साथ वैमनस्य हो उसका अमुकं के स्थान पर नाम पढ़ा जाए।

५. परिणाम

वैमनस्य दूर होता है, मित्रता का विकास होता है।

७ मार्च
२००२

ॐ

अभ्युदय

१. समस्या

इष्ट की प्राप्ति का अवरोध।

२. मंत्र

ॐ ह्रीं यैं णमो अरहंताणं।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. परिणाम

सर्वतोमुखी विकास।

८ मार्च
२००२

ॐ

अहं का विलय

१. मंत्र

अर्हं।

२. प्रयोग विधि

नाभिगत सुवर्ण कमल के मध्य 'अर्हं' की कल्पना करें। फिर वह 'अर्हं' आकाश में सभी दिशाओं में संचरण कर रहा है, ऐसा चिन्तन करें।

३. परिणाम

सुरक्षा कवच।

६ मार्च
२००२

ॐ

प्रसन्नता का हेतु

१. मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं क्लीं ब्लूं श्लीं प्लीं स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन २१ बार।

३. परिणाम

राजा और प्रजा प्रसन्न होते हैं।

१० मार्च
२००२

देवता की प्रसन्नता

१. मंत्र

ॐ ह्रीं ऐं

एवं मए अभिथुआ विहुयरयमला पहीणजरमरणा।
चउवीसंपि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु।।

२. मंत्र संख्या

५५ हजार।

३. प्रयोग विधि

पूर्व दिशा में मंत्र का जप करें।

४. परिणाम

सभी देवता प्रसन्न होते हैं। चारों ओर से सुखप्रद वातावरण का निर्माण होता है।

११ मार्च
२००२

ॐ

मंगल भाव

१. समस्या

निषेधात्मक विचार।

२. मंत्र

अरहंता मंगलं।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. प्रयोग विधि

जप का प्रयोग करते समय चित्त को विशुद्धि केन्द्र पर केन्द्रित करें।

५. परिणाम

विधायक भाव/मंगल भाव का विकास होता है।

१२ मार्च
२००२

ॐ

विधायक विचार

१. समस्या

निषेधात्मक विचार।

२. समाधान

चैतन्य केन्द्र पर मंत्र का जप।

३. मंत्र

ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं।

४. चैतन्य केन्द्र

विशुद्ध केन्द्र।

५. प्रयोग विधि

विशुद्धि केन्द्र पर ध्यान केन्द्रित कर दीर्घश्वास का प्रयोग करें। मंत्र-जप का मंद उच्चारण अथवा मानसिक जप करें।

६. कालमान

५ मिनिट से ३० मिनिट तक।

७. परिणाम

विधायक विचार का विकास होता है।

१३ मार्च
२००२

ॐ

अशुभ भाव निषेधक

१. समस्या

अशुभ चिंतन।

२. मंत्र

ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १० माला।

४. परिणाम

शुभ चिंतन का आविर्भाव।

१४ मार्च
२००२

भाव-विशुद्धि

१. समस्या

निषेधात्मक भाव।

२. समाधान

चैतन्य केन्द्र पर सफेद रंग का ध्यान।

३. मंत्र

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं।

४. चैतन्य केन्द्र

ज्ञान केन्द्र।

५. प्रयोग विधि

ज्ञान केन्द्र पर ध्यान केन्द्रित कर दीर्घश्वास का प्रयोग करें। मंत्र का मंद उच्चारण करें।

६. कालमान

५ मिनिट से ३० मिनिट तक।

७. परिणाम

भावात्मक शुद्धि का विकास होता है।

१५ मार्च
२००२

ॐ

सर्व शांतिदायक

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं अर्हं नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन २ माला।

३. प्रयोग विधि

प्रातःकाल और सायंकाल जप करें।

४. परिणाम

शांति देने वाला।

१६ मार्च
२००२

शांति प्रदायक (१)

१. मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्वशांतिं तुष्टिं पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं नमः। क्लीं सर्वारोग्यं कुरु कुरु स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

पूर्व दिशा की ओर मुख करें। गुरुवार के दिन जप प्रारम्भ करें। ११००० जप के द्वारा मंत्र सिद्ध करें।

४. परिणाम

आत्मिक शांति मिलती है।

१७ मार्च
२००२

ॐ

शांति प्रदायक (२)

१. मंत्र

ॐ नमो उज्जुमईणं जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय स्वाहा ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

२४ दिन तक जप का प्रयोग करें।

४. परिणाम

शांतिमय वातावरण।

१८ मार्च
२००२

शांति और सिद्धिदायक (१)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

१. मानसिक तथा पारिवारिक शांति।

२. इष्टसिद्धि ।

१६ मार्च
२००२

शांति और सिद्धिदायक (२)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

२. प्रयोग विधि

किसी प्रकार की अशांति का प्रसंग होने पर मंत्र का १०८ बार जप करें।

३. परिणाम

१. मानसिक तथा पारिवारिक शांति।

२. इष्टसिद्धि।

२० मार्च
२००२

मानसिक आह्लाद

१. समस्या

मानसिक अवसाद (ऊ्शाशिीीळेप)।

२. समाधान

चैतन्य केन्द्र पर मंत्र का जप।

३. मंत्र

ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं।

४. चैतन्य केन्द्र

आनन्द केन्द्र।

५. प्रयोग विधि

आनन्द केन्द्र पर ध्यान केन्द्रित कर दीर्घ-श्वास का प्रयोग करें। मंत्र का मंद उच्चारण अथवा मानसिक जप करें।

६. कालमान

५ मिनिट से ३० मिनिट तक।

७. परिणाम

मानसिक आह्लाद, प्रसन्नता।

२१ मार्च
२००२

ॐ

मानसिक शांति (१)

१. समस्या

मानसिक असमाधि।

२. मंत्र

ॐ णमो पदानुसारीणं जिणाणं ह्रां ह्रीं।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. प्रयोग विधि

जप करते समय आनन्द केन्द्र पर चित्त को केन्द्रित करें।

५. परिणाम

मन की शांति प्राप्त होती है।

२२ मार्च
२००२

ॐ

मानसिक शांति (२)

१. समस्या

चंचलता।

२. मंत्र

ॐ णमो उज्जुमईजिणाणं ह्रां ह्रीं।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. प्रयोग विधि

जप करते समय ज्योति केन्द्र पर चित्त को केन्द्रित करें।

५. परिणाम

मन की चंचलता कम होती है।

२३ मार्च
२००२

ॐ

मानसिक शांति (३)

१. समस्या

चंचलता और मानसिक अशांति।

२. समाधान

चैतन्य केन्द्र पर नमस्कार महामंत्र का जप।

३. मंत्र

ऊँ ह्रीं णमो अरहंताणं।

४. चैतन्य केन्द्र

ज्ञान केन्द्र।

५. प्रयोग विधि

ज्ञान केन्द्र पर ध्यान केन्द्रित कर दीर्घश्वास का प्रयोग करें। मंत्र का मंद उच्चारण अथवा मानसिक जप। कम से कम पांच मिनिट तक इसका प्रयोग करें।

६. कालमान

५ मिनिट से ३० मिनिट ।

७. परिणाम

मानसिक शांति।

२४ मार्च
२००२

ॐ

मानसिक शांति (४)

१. मंत्र

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति
विद्योतयज्जगदपूर्व-शशांकबिम्बम्।।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

मानसिक भ्रांति का निवारण होता है। शत्रु-सेना स्तम्भित होती है।

२५ मार्च
२००२

मानसिक शांति (५)

१. समस्या

मन की अशांति।

२. मंत्र

ॐ णमो शांतिनाथाय सर्वशांतिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्युविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय झ्रौं वं मं हं सं तं यं क्षीं हं सः अ सि आ उ सा मम सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन २१ बार।

४. परिणाम

मानसिक शांति का विकास होता है।

२६ मार्च
२००२

ॐ

मनोरथ-सिद्धि (१)

१. मंत्रह्व

उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख-
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत् किरणमस्ततमोवितानं
बिम्बं रवेरिव पयोधर-पार्श्ववर्ति।।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

मनोरथ सिद्ध होते हैं। सौभाग्य, कीर्ति और लक्ष्मी की वृद्धि होती है।

२७ मार्च
२००२

ॐ

मनोरथ-सिद्धि (२)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं भगवती मम सर्ववांछितं देहि देहि स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

वांछित मनोरथ सफल होता है।

२८ मार्च
२००२

मनोवांछित कार्यसिद्धि (१)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं चिन्तामणिपार्श्वनाथाय अर्हते नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

मनोवांछित कार्य सिद्ध होता है।

२६ मार्च
२००२

मनोवांछित कार्यसिद्धि (२)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं सकलकार्यसिद्धिकराय श्री वर्द्धमानाय नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

मनोवांछित कार्य सिद्ध होता है।

३० मार्च
२००२

मनवांछित प्राप्ति

१. समस्या

मन-इच्छित कार्य नहीं होना।

२. मंत्र

तूं प्रभु कल्पतरु जिसो
तूं चिन्तामणि जोय।
समरण करतां आपरो
मनवांछित होय।।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. परिणाम

मन-इच्छित की प्राप्ति।

३१ मार्च
२००२

ॐ

मनोकामना की संपूर्ति

१. समस्या

इच्छापूर्ति में बाधा।

२. मंत्र

ॐ ह्रीं वैं णमो आयरियाणं।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन एक माला।

४. परिणाम

शक्य इच्छा की पूर्ति।

१ अप्रैल
२००२

ॐ

मनचिन्तित वस्तु की प्राप्ति

१. मंत्र

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु।
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

मनोरथ पूर्ण होता है। मन में चिन्तित व्यक्ति या वस्तु की प्राप्ति होती है।

२ अप्रैल
२००२

ॐ

मनोकामना-पूर्ति

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला ।

३. परिणाम

मनोकामना की पूर्ति होती है।

३ अप्रैल
२००२

कामना-पूर्ति

१. मंत्र

ह्रीं ॐ ॐ ह्रीं हं सः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३.परिणाम

मनोकामना पूर्ण होती है।

४ अप्रैल
२००२

ॐ

इष्ट-सिद्धि (१)

१. मंत्र

ॐ णमो भगवओ गोयमस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अक्खीण महाणस्स ॐ अवतर अवतर ॐ अक्खीण महाणस्स स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन २१ बार।

३. परिणाम

लाभ, यश और सुख की प्राप्ति होती है।

५ अप्रैल
२००२

ॐ

इष्ट-सिद्धि (२)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं पार्श्वनाथाय नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

इच्छित कार्य की सिद्धि होती है।

६ अप्रैल
२००२

इष्ट-सिद्धि (३)

१. मंत्र

ॐ नमो विउव्वणलद्धिपत्ताणं जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय स्वाहा ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

२८ दिन तक जप का प्रयोग करें।

४. परिणाम

इष्ट वस्तु की प्राप्ति होती है।

७ अप्रैल
२००२

इच्छापूर्ति (१)

१. मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं ॐ णमो सिद्धाणं ॐ णमो आयरियाणं ॐ णमो उवज्झायाणं ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ॐ णमो नाणाय ॐ णमो दंसणाय ॐ णमो चरित्ताय ॐ णमो तवाय।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन २१ बार।

३. परिणाम

इच्छा की पूर्ति होती है।

८ अप्रैल
२००२

ॐ

इच्छापूर्ति (२)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं क्लीं ब्लीं स्वाहा।

२. प्रयोग विधि

प्रतिदिन १०८ बार मंत्र का उच्चारण कर मुख पर हाथ फेरें।

३. परिणाम

शरीर की रक्षा होती है, मन-चिन्तित वस्तु मिलती है।

६ अप्रैल
२००२

ॐ

इच्छापूर्ति (३)

१. मंत्र

समरण थी सुख संपजै
जाप जप्यां जश भारी हो।
मनवांछित मनोरथ फलै
भजन करो नर नारी हो॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

मनोकामना की पूर्ति होती है। यश बढ़ता है।

१० अप्रैल
२००२

ॐ

इष्ट कार्य की सिद्धि

१. समस्या

कार्य-सिद्धि का अभाव।

२. मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं ॐ णमो भगवईए चंदाई महाविज्जाए सत्तट्ठाए गिरे गिरे हुलु हुलु चुलु चुलु मयूरवाहिनीए स्वाहा।

३. मंत्र संख्या

१० हजार का जप कर मंत्र सिद्ध करें।

४. प्रयोग विधि

ग्राम में प्रवेश करते समय तथा विशेष कार्य के समय मंत्र की २१ आवृत्तियां करें।

५. परिणाम

मनवांछित लाभ।

११ अप्रैल
२००२

इष्ट फल-प्राप्ति

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं ॐ णमो देवदेवाय नित्यं भगवते अर्हते श्रीमते पार्श्वनाथाय सर्वकल्याण-कारिणे ह्रीं धरणेन्द्रश्रीपद्मावतिपूजिताय महात्मने महात्मने अट्टे मट्टे क्षुद्रविघट्टे क्षुद्रान्-दुष्टान् स्तंभय स्तंभय मम वांछितं पूरय पूरय स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

मन-चिन्तित फल की उपलब्धि होती है।

१२ अप्रैल
२००२

इष्ट व्यक्ति की प्राप्ति

१. मंत्र

यैः शान्तरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं
निर्मापितस्त्रिभुवनैक-ललामभूत।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां
यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

अभीप्सित व्यक्ति मिल जाता है। हाथी का मद उतर जाता है।

१३ अप्रैल
२००२

ॐ

अष्ट सिद्धि प्रदायक

१. मंत्र

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र! गुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं
तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

४९ दिन तक प्रतिदिन पीली माला से १०८ बार जप करना।

४. परिणाम

समस्त मनोरथ पूर्ण होते हैं।

१४ अप्रैल
२००२

ॐ

अचिन्त्य फल-प्राप्ति

१. मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरहंताणं ह्रीं नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

जप करते समय मुंह उत्तर दिशा की ओर रहे।

४. परिणाम

अचिन्तित फल की प्राप्ति।

१५ अप्रैल
२००२

ॐ

अनुकूलता-दायक

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमिनाथाय नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

चारों ओर से अनुकूलताएं मिलती हैं।

१६ अप्रैल
२००२

ॐ

कार्य-सिद्धि (१)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं णमो अरहंताणं ॐ ह्रीं श्रीं णमो सिद्धाणं ॐ ह्रीं श्रीं णमो आयरियाणं ॐ ह्रीं श्रीं णमो उवज्झायाणं ॐ ह्रीं श्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं।

२. मंत्र संख्या

प्रयोग विधि को पूर्ण करने के बाद इस मंत्र के प्रत्येक पद की निश्चित दिशा में एक-एक माला का प्रयोग करें।

३. प्रयोग विधि

ॐ ह्रीं श्रीं णमो अरहंताणंह्नपूर्व दिशा, ६ माला।
ॐ ह्रीं श्रीं णमो सिद्धाणंह्नपूर्व दिशा, ६ माला।
ॐ ह्रीं श्रीं णमो आयरियाणंह्नउत्तर दिशा, ६ माला।
ॐ ह्रीं श्रीं णमो उवज्झायाणंह्नपश्चिम दिशा, ६ माला।
ॐ ह्रीं श्रीं णमो लोए सव्वसाहूणंह्नदक्षिण दिशा, ६ माला।

इस मंत्र का त्रिसन्ध्या में २७ दिन तक जप करें। मंत्राराधना के समय सफेद वस्तु का सेवन करें। भूमिशयन और ब्रह्मचर्य का पालन करें। मृषा भाषा का वर्जन करें।

४. परिणाम

सर्व कार्य सिद्ध होते हैं।

१७ अप्रैल
२००२

कार्य-सिद्धि (२)

१. मंत्र

ॐ ऐं ॐ नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन ९ बार।

३. प्रयोग विधि

घर से बाहर निकलते हुए उच्चारण करें।

४. परिणाम

जिस कार्य के लिए घर से प्रस्थान किया है, उस कार्य की पूर्ति होती है।

१८ अप्रैल
२००२

कार्य-सिद्धि (३)

१. मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

त्रिसन्ध्या में एक माला।

३. प्रयोग विधि

२१ दिनों में सवा लाख का जप कर मंत्र को सिद्ध करें।

४. परिणाम

मनचिंतित कार्य सफल होते हैं।

१६ अप्रैल
२००२

कार्य-सिद्धि (४)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं ऐं क्लीं श्रीं पद्मावतीदेव्यै नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

सर्व कार्य सिद्ध होते हैं।

२० अप्रैल
२००२

ॐ

कार्य-सिद्धि (५)

१. समस्या

कार्य में विघ्न-बाधा।

२. मंत्र

ऐं णमो उवज्झायाणं

ऐं णमो लोए सव्वसाहूणं

ऐं णमो आयरियाणं

ऐं णमो सिद्धाणं

ऐं णमो अरहंताणं।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन एक माला।

४. प्रयोग विधि

मंत्र सिद्धि के लिए १२००० का जप।

५. परिणाम

सर्व कार्य-सिद्धि ।

२१ अप्रैल
२००२

सर्व कार्य-साधक (१)

१. मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

उत्तर दिशा की ओर मुंह कर २१ दिन तक सवा लाख का जप निरन्तर करें। बीच में कोई व्यवधान न हो। एक समय भोजन, ब्रह्मचर्य का पालन।

४. परिणाम

सर्व कार्य-सिद्ध।

२२ अप्रैल
२००२

ॐ

सर्व कार्य-साधक (२)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

त्रिसन्ध्या में १-१ माला।

३. प्रयोग विधि

२१ दिन में सवा लाख का जप कर मंत्र सिद्ध करें।

४. परिणाम

सर्व कार्य-सिद्धि।

२३ अप्रैल
२००२

सर्व सिद्धि-दायक (१)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा क्लीं नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

मंत्र की सिद्धि के लिए सवा लाख का जप करें।

४. परिणाम

सर्व सिद्धि देने वाला।

२४ अप्रैल
२००२

ॐ

सर्व सिद्धि-दायक (२)

१. मंत्र

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं णमो णाणस्स णमो दंसणस्स णमो चरित्तस्स णमो तवस्स।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

कार्य-सिद्धि में सहायक बनता है।

२५ अप्रैल
२००२

सर्व सिद्धि-दायक (३)

१. मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ अ सि आ उ सा नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

मंत्र की सिद्धि के लिए सवा लाख का जप करें।

४. परिणाम

सर्व सिद्धि देने वाला।

२६ अप्रैल
२००२

ॐ

सर्व सिद्धि-दायक (४)

१. समस्या

प्राप्ति में बाधा।

२. मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं सिद्धाणं सूरीणं उवज्झायाणं साहूणं मम ऋद्धिं वृद्धिं समीहितं कुरु कुरु स्वाहा।

३. मंत्र संख्या

३२ बार।

४. प्रयोग विधि

प्रतिदिन तीन सन्ध्याओं में मंत्र का अभ्यास करें।

५. परिणाम

संपदा की प्राप्ति और सर्व सिद्धि ।

२७ अप्रैल
२००२

ॐ

सर्व सिद्धि-दायक (५)

१. मंत्र

ॐ क्षौं ॐ क्षीं ॐ क्षुं ॐ क्षः स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन एक माला।

३. परिणाम

सर्व कार्य में सिद्धि प्राप्त होती है।

२८ अप्रैल
२००२

सिद्धि प्रदायक

१. मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं ॐ णमो सिद्धाणं ॐ णमो आयरियाणं ॐ णमो उवज्झायाणं ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

सर्व कार्य सिद्ध होते हैं।

२६ अप्रैल
२००२

ब्रह्मचर्य-विकास

१. मंत्र

मन दृढ़ वच दृढ़ महामुनि
शील दृढ़ सुविचारी हो।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

इन्द्रियों पर विजय प्राप्त होती है।

३० अप्रैल
२००२

ॐ

ब्रह्मचर्य पालन की शक्ति

१. मंत्र

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि-
नींतं मनागपि मनो न विकारमार्गम्।
कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन
किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित्॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

प्रतिष्ठा एवं सौभाग्य-वृद्धि होती है। तेजस्वी आभामंडल का निर्माण होता है।

१ मई
२००२

तेजस्विता

१. मंत्र

ॐ ऋषभाय नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

साढ़े बारह हजार जप कर मंत्र सिद्ध करें।

४. परिणाम

सूर्य ग्रह-जनित दोष दूर होता है।

२ मई
२००२

समाधि मृत्यु

१. मंत्र

ॐ ॐ अम्बरी

कित्तिय वंदिय मए जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।

आरुग्गबोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

१४०००।

३. परिणाम

समाधिपूर्ण मृत्यु प्राप्त होती है।

३ मई
२००२

ॐ

इन्द्रिय-पाटव

१. मंत्र

णमो अरहंताणं।

२. प्रयोग विधि

इस सप्ताक्षरी मंत्र को सात मुख छिद्रों में स्थापित करें।

ण	दायां कान
मो	बांयां कान
अ	दायां नथुना
र	बांयां नथुना
हं	दाईं आंख
ता	बाईं आंख
णं	मुख

३. कालमान

२१ मिनिट।

४. परिणाम

इन्द्रिय-पाटव का विकास, दूरस्थ वस्तु का प्रत्यक्षीकरण।

४ मई
२००२

राहु ग्रह (१)

१. समस्या

राहु ग्रह-जनित।

२. चैतन्य केन्द्र

शक्ति केन्द्र।

३. मंत्र

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं।

४. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १० माला।

५. रंग

नीला।

६. प्रयोग विधि

१. शक्ति केन्द्र पर ध्यान केन्द्रित करें।

२. नीले रंग का ध्यान करें।

७. परिणाम

राहु ग्रह-जनित समस्या का निवारण।

५ मई
२००२

राहु ग्रह (२)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं नमो नेमिनाथाय नमः मम राहुग्रहशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

२१ हजार का जप करने से सिद्ध होता है।

४. परिणाम

राहु ग्रह संबंधी उपद्रव शांत होते हैं।

६ मई
२००२

ॐ

गुरु ग्रह (१)

१. समस्या

गुरु ग्रह-जनित।

२. समाधान

चैतन्य केन्द्र पर रंग के साथ मंत्र जप।

३. चैतन्य केन्द्र

दर्शन केन्द्र ।

४. मंत्र

ऊँ ह्रीं णमो आयरियाणं ।

५. मंत्र संख्या

प्रतिदिन एक माला।

६. रंग

हरा रंग।

७. प्रयोग विधिह्व

१. दर्शन केन्द्र पर ध्यान केन्द्रित करें।

२. हरे रंग का ध्यान करें।

८. परिणाम

गुरु ग्रह-जनित समस्या का निवारण।

७ मई
२००२

गुरु ग्रह (२)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं ऋषभदेवाय नमः मम गुरु ग्रह-शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

१२ हजार का जप करने से मंत्र सिद्ध होता है।

४. परिणाम

गुरु ग्रह संबंधी उपद्रव शांत होते हैं।

८ मई
२००२

गुरु ग्रह (३)

१. समस्या

गुरु ग्रह-जनित।

२. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं शांतिनाथाय नमः।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. परिणाम

गुरु ग्रह संबंधी उपद्रव दूर होते हैं।

६ मई
२००२

ॐ

केतु ग्रह (१)

१. समस्या

केतु ग्रह-जनित।

२. समाधान

चैतन्य केन्द्र पर रंग के साथ मंत्र जप ।

३. चैतन्य केन्द्र

शक्ति केन्द्र ।

४. मंत्र

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं ।

५. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १० माला ।

६. रंग

नीला ।

७. प्रयोग विधि

१. शक्ति केन्द्र पर ध्यान केन्द्रित करें।

२. नीले रंग का ध्यान करें।

८. परिणाम

केतु ग्रह-जनित समस्या का निवारण ।

१० मई
२००२

केतु ग्रह (२)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं नमो भगवते पार्श्वनाथाय मम केतुग्रहशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

२१ हजार का जप करने से मंत्र सिद्ध होता है।

४. परिणाम

केतु ग्रह संबंधी उपद्रव शांत होते हैं।

११ मई
२००२

बुध ग्रह (१)

१. समस्या

बुध ग्रह-जनित।

२. चैतन्य केन्द्र

शक्ति केन्द्र ।

३. मंत्र

ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं ।

४. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १० माला ।

५. रंग

हरा ।

६. प्रयोग विधि

१. शक्ति केन्द्र पर ध्यान केन्द्रित करें।

२. हरे रंग का ध्यान करें।

७. परिणाम

बुध ग्रह-जनित समस्या का निवारण ।

१२ मई
२००२

बुध ग्रह (२)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं नमो शांतिनाथाय मम बुधग्रहशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

१० हजार का जप करने से मंत्र सिद्ध होता है।

४. परिणाम

बुध ग्रह संबंधी उपद्रव शांत होते हैं।

१३ मई
२००२

ॐ

शनि ग्रह (१)

१. समस्या

शनि ग्रह-जनित।

२. समाधान

चैतन्य केन्द्र पर रंग के साथ मंत्र जप।

३. चैतन्य केन्द्र।

ज्ञान केन्द्र।

४. मंत्र

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं ।

५. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १० माला ।

५. रंग

नीला ।

६. प्रयोग विधि

१. ज्ञान केन्द्र पर ध्यान केन्द्रित करें।

२. नीले रंग का ध्यान करें।

७. परिणाम

शनि ग्रह-जनित समस्या का निवारण।

१४ मई
२००२

शनि ग्रह (२)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं मुनिसुव्रतस्वामिने नमः मम शनिग्रहशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

३२ हजार का जप करने से मंत्र सिद्ध होता है।

४. परिणाम

शनि ग्रह संबंधी उपद्रव शांत होते हैं।

१५ मई
२००२

ॐ

शनि ग्रह (३)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं मुनिसुव्रतनाथाय नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

शनि ग्रह संबंधी उपद्रव शांत होते हैं।

१६ मई
२००२

ॐ

शुक्र ग्रह (१)

१. समस्या

शुक्र ग्रह-जनित।

२. समाधान

चैतन्य केन्द्र पर रंग के साथ मंत्र जप ।

३. चैतन्य केन्द्र

स्वास्थ्य केन्द्र ।

४. मंत्र

ऊँ ह्रीं णमो अरहंताणं ।

५. मंत्र संख्या

प्रतिदिन एक माला ।

६. रंग

सफेद ।

७. प्रयोग विधि

१. स्वास्थ्य केन्द्र पर ध्यान केन्द्रित करें।

२. सफेद रंग का ध्यान करें।

८. परिणाम

शुक्र ग्रह-जनित समस्या का निवारण।

१७ मई
२००२

शुक्र ग्रह (२)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं सुविधिनाथाय नमः मम शुक्रग्रहशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

११ हजार का जप करने से मंत्र सिद्ध होता है।

४. परिणाम

शुक्र ग्रह संबंधी उपद्रव शांत होते हैं।

१८ मई
२००२

ॐ

सूर्य ग्रह (१)

१. समस्या

सूर्य ग्रह-जनित।

२. समाधान

चैतन्य केन्द्र पर रंग के साथ मंत्र जप ।

३. चैतन्य केन्द्र

तैजस केन्द्र ।

४. मंत्र

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ।

५. मंत्र संख्या

प्रतिदिन एक माला ।

६. रंग

अरुण रंग ।

७. प्रयोग विधि

१. तैजस केन्द्र पर ध्यान केन्द्रित करें।

२. अरुण रंग का ध्यान करें।

८. परिणाम

सूर्य ग्रह-जनित समस्या का निवारण।

१९ मई
२००२

सूर्य ग्रह (२)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं पद्मप्रभवे नमः मम सूर्यग्रह-शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

२१ हजार जप करने से मंत्र सिद्ध होता है।

४. परिणाम

सूर्य ग्रह संबंधी सारे उपद्रव शांत होते हैं।

२० मई
२००२

ॐ

मंगल ग्रह (१)

१. समस्या

मंगल ग्रह-जनित ।

२. समाधान

चैतन्य केन्द्र पर रंग के साथ मंत्र जप।

३. चैतन्य केन्द्र

आनन्द केन्द्र।

४. मंत्र

ऊँ ह्रीं णमो सिद्धाणं।

५. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १० माला।

६. रंग

अरुण रंग।

७. प्रयोग विधि

१. आनन्द केन्द्र पर ध्यान केन्द्रित करें।

२. अरुण रंग का ध्यान करें।

८. परिणाम

मंगल ग्रह-जनित समस्या का निवारण।

२१ मई
२००२

मंगल ग्रह (२)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं नमो वासुपूज्यभगवते मम मंगलग्रहशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

८ हजार का जप करने से मंत्र सिद्ध होता है।

४. परिणाम

मंगल ग्रह संबंधी उपद्रव शांत होते हैं।

२२ मई
२००२

ॐ

मंगल ग्रह (३)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं वासुपूज्यप्रभवे नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

मंगल ग्रह की शांति होती है।

२३ मई
२००२

ॐ

चन्द्र ग्रह (१)

१. समस्या

चन्द्र ग्रह-जनित ।

२. समाधान

चैतन्य केन्द्र पर रंग के साथ मंत्र जप ।

३. चैतन्य केन्द्र

विशुद्धि केन्द्र ।

४. मंत्र

ऊँ ह्रीं णमो अरहंताणं ।

५. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १० माला ।

६. रंग

सफेद रंग ।

७. प्रयोग विधि

१. विशुद्धि केन्द्र पर ध्यान केन्द्रित करें।

२. सफेद रंग का ध्यान करें।

८. परिणाम

चन्द्र ग्रह-जनित समस्या का निवारण।

२४ मई
२००२

चन्द्र ग्रह (२)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं नमश्चन्द्रप्रभवे नमः मम चन्द्रग्रहशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

१ हजार का जप करने से मंत्र सिद्ध होता है।

४. परिणाम

चन्द्र ग्रह संबंधी उपद्रव शांत होते हैं।

२५ मई
२००२

न्यास (१)

१. मंत्र

अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन २०० आवृत्तियां।

३. प्रयोग विधि

सोलह दल वाले हृदय-कमल की कल्पना करें। प्रत्येक दल पर मंत्र के वर्ण का न्यास करें। कर्णिका में सिद्ध की स्थापना करें।

४. परिणाम

एक उपवास का फल।

२६ मई
२००२

ॐ

न्यास (२)

१. मंत्र

अरहंत सिद्ध।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन ३०० आवृत्तियां ।

३. प्रयोग विधि

छह दल वाले हृदय-कमल की कल्पना करें। प्रत्येक दल पर मंत्र के वर्ण का न्यास करें। कर्णिका में सिद्ध की स्थापना करें।

४. परिणाम

एक उपवास का फल।

२७ मई
२००२

न्यास (३)

१. मंत्र

अरहंत ।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन ४०० आवृत्तियां ।

३. प्रयोग विधि

चार दल वाले हृदय-कमल की कल्पना करें। प्रत्येक दल पर मंत्र के वर्ण का न्यास करें। कर्णिका में सिद्ध की स्थापना करें।

४. परिणाम

एक उपवास का फल।

२८ मई
२००२

रक्षा-कवच (१)

१. मंत्र

नमस्कार महामंत्र।

२. मंत्र संख्या

२१ आवृत्तियां ।

३. प्रयोग विधि

मंत्र जप के साथ संबद्ध अंग का ध्यान करें।

ॐ णमो अरहंताणंह्नशिरोरक्षा

ॐ णमो सिद्धाणंह्नमुख रक्षा

ॐ णमो आयरियाणंह्नदक्षिण हस्त रक्षा

ॐ णमो उवज्झायाणंह्नवाम हस्त रक्षा

ॐ णमो लोए सव्वसाहूणंह्नकवच

४. परिणाम

संपूर्ण शरीर की रक्षा।

२६ मई
२००२

रक्षा-कवच (२)

१. समस्या

बाह्य उपद्रव।

२. मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं
ॐ णमो सिद्धाणं
ॐ णमो आयरियाणं
ॐ णमो उवज्झायाणं
ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच णमोक्कारो सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं॥
ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ बार।

४. प्रयोग विधि

२१ दिन तक २१ बार जप करें।

५. परिणाम

शरीर-रक्षा ।

३० मई
२००२

ॐ

रक्षा-कवच (३)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा सर्व दुष्टान् स्तंभय स्तंभय मोहय मोहय अन्धय अन्धय मूकवत् कुरु कुरु ॐ ह्रीं दुष्टान् ठः ठः ठः स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

शत्रु, भूत, प्रेतादि-भय निवारण।

३१ मई
२००२

रक्षा-कवच (४)

१. मंत्र

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात्।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र!पन्थाः॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

मंत्र को १०८ बार जप कर शरीर पर फूंक मारें।

४. परिणाम

शरीर की रक्षा होती है।

१ जून
२००२

रक्षा-कवच (५)

१. समस्या

तांत्रिक प्रयोग से उत्पन्न बाधा।

२. मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं ज्म्ल्व्र्यूं हृदयं रक्ष रक्ष ह्रां स्वाहा

ॐ णमो सिद्धाणं इम्ल्व्र्यूं शिरो रक्ष रक्ष ह्रूं स्वाहा

ॐ णमो आयरियाणं ड्म्ल्व्र्यूं शिखां रक्ष रक्ष ह्रैं स्वाहा

ॐ णमो उवज्झायाणं ह्म्ल्व्र्यूं वज्राणं कवचं रक्ष रक्ष ह्रौं स्वाहा

ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं क्ष्म्ल्व्र्यूं सर्वदुष्टान् निवारय निवारय ह्रः स्वाहा।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन २१ बार।

४. परिणाम

अङ्ग-रक्षा।

२ जून
२००२

ॐ

रक्षा-कवच (६)

१. समस्या

बाह्य उपद्रव ।

२. मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं ह्रां हृदयं रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा

ॐ णमो सिद्धाणं ह्रीं शिरो रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा

ॐ णमो आयरियाणं ह्रूं शिखां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा

ॐ णमो उवज्झायाणं ह्रैं एहि एहि भगवति वज्रकवचं वज्रिणि रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा

ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः क्षिप्रं साधय साधय वज्रहस्ते शूलिनि दुष्टान् रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।

३. मंत्र जप

दिन में एक बार।

४. प्रयोग विधि

१२००० का जप कर इस मंत्र को सिद्ध करें।

५. परिणाम

सर्व उपद्रव का विलय।

३ जून
२००२

ॐ

रक्षा-कवच (७)

१. समस्या

शारीरिक व्याघात ।

२. मंत्र

मंत्र	**अवयव**
ॐ णमो अरहंताणं	नाभि
ॐ णमो सिद्धाणं	हृदय
ॐ णमो आयरियाणं	कण्ठ
ॐ णमो उवज्झायाणं	मुख
ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं	मस्तक

सर्वांगेषु मां रक्ष रक्ष हिलि हिलि मातंगिनी स्वाहा।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ बार।

४. प्रयोग विधि

मंत्र सिद्धि के लिए १२००० का जप करें। मंत्र का उच्चारण करते समय नाभि आदि अवयवों पर ध्यान केन्द्रित करें।

५. परिणाम

शरीर-रक्षा।

४ जून
२००२

रक्षा-कवच (८)

१. मंत्र

नमस्कार महामंत्र।

२. मंत्र संख्या

प्रारम्भ में इसकी २१ आवृत्तियां करें। २१ दिन के पश्चात् प्रतिदिन एक आवृत्ति करें।

३. प्रयोग विधि

मनुष्य आकृति की कल्पना कर उसमें अपने शरीर को स्थापित करें। उसमें अपने मस्तक, मुख, हृदय, कण्ठ और चरण की स्पष्ट कल्पना करें। उन पांच अंगों में नमस्कार महामंत्र के पांच पदों का न्यास करें।

मंत्र	**अवयव**
ॐ णमो अरहंताणं	नाभि
ॐ णमो सिद्धाणं	हृदय
ॐ णमो आयरियाणं	कण्ठ
ॐ णमो उवज्झायाणं	मुख
ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं	मस्तक

४. परिणाम

शरीर-रक्षा।

५ जून
२००२

ॐ

रक्षा-कवच (९)

१. समस्या

बाह्य उपद्रव।

२. मंत्र

णमो अरहंताणं शिखायां
णमो सिद्धाणं मुखावरणे
णमो आयरियाणं अंगरक्षा
णमो उवज्झायाणं आयुधं
णमो लोए सव्वसाहूणं मौर्वी ।

एसो पंचणमुक्कारो पादतले वज्रशिला।
सव्व पावप्पणासणो वज्रमय चतुर्दिक्षु॥
मंगलाणं च सव्वेसिं खादिराङ्गाररखातिका।
पढमं हवइ मंगलं प्राकारोपरिवज्रमयटंकणकं।।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन ९ बार।

४. परिणाम

अंग-रक्षा।

६ जून
२००२

शरीर-रक्षा कवच

१. मंत्र

ॐ नमः सिद्धम्।

२. मंत्र संख्या

इस मंत्र का एक बार पाठ करें।

जिस अवयव पर न्यास किया है उस अवयव पर मंत्र का साक्षात् करें।

३. प्रयोग विधि

पांचों अवयवों पर इस मंत्र का न्यास करें।

ॐ	भ्रू युग्म
न	नासाग्र
मः	ओष्ठ युगल
सि	कर्णपाली
द्धं	ग्रीवा

४. परिणाम

शरीर-रक्षा और कवच।

७ जून
२००२

ॐ

अङ्ग-रक्षा

१. मंत्र

ॐ ह्रीं क्लीं ब्लीं स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

आवश्यकतानुसार मंत्र का जप कर मुख पर हाथ फेरें।

४. परिणाम

शरीर-रक्षा होती है।

८ जून
२००२

पारस्परिक सौहार्द

१. समस्या

गृह-कलह।

२. मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं ।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. प्रयोग विधि

पूर्वाभिमुख होकर जप करें। प्रत्येक पद के उच्चारण के साथ नए वस्त्र के १०८ गांठ लगाएं।

५. परिणाम

गृह-कलह का निवारण होता है। पारिवारिक शांति वर्धमान होती है।

६ जून
२००२

ॐ

पारिवारिक शांति

१. समस्या

पारिवारिक कलह।

२. मंत्र

ॐ अ सि आ उ सा नमः।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. परिणाम

पारिवारिक शांति होती है।

१० जून
२००२

परिवार में सम्मान

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं

कुंथुं अरं च मल्लिं वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।

वंदामि रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च॥

मम मनोवांछितं पूरय पूरय ह्रीं स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

१२ हजार।

३. प्रयोग विधि

उत्तर दिशा में मुख कर मंत्र का जप करें।

४. परिणाम

पारिवारिक शांति होती है।

११ जून
२००२

ॐ

परिवार-रक्षा

१. मंत्र

ॐ अरिहे सर्वं रक्ष हं फट् स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

प्रातः और सायं जप करें।

४. परिणाम

पारिवारिक संकट दूर होते हैं।

१२ जून
२००२

उपद्रव शांति

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं फट् स्वाहा किटि किटि घातय घातय परविघ्नान् छिन्द छिन्द परमंत्रान् भिन्द भिन्द क्षः फट् स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ बार।

३. प्रयोग विधि

उपद्रव के समय मंत्र की २१ आवृत्तियां करें।

४. परिणाम

उपद्रव शांत होता है।

१३ जून
२००२

उपद्रव निवारक

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं धर्मनाथाय नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

उपद्रव का नाश होता है।

१४ जून
२००२

अरिष्टनाशक (१)

१. समस्या

बार-बार विघ्न से प्रताड़ित होना।

२. मंत्र

१. ह्रीं।

२. ह्रीं क्रीं श्रीं।

३. ॐ ह्रीं ध्रीं फ्रीं ह्रीं।

३. प्रयोग विधि

इनमें से कोई भी मंत्र ४० बार पढ़ने से सिद्ध होता है।

४. परिणाम

सारे उपद्रव दूर हो जाते हैं।

१५ जून
२००२

ॐ

अरिष्टनाशक (२)

१. मंत्र

मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

सारे उपद्रव दूर हो जाते हैं।

१६ जून
२००२

तांत्रिक उपद्रव का शमन

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कलिकुंड दंड स्वामिन्! आगच्छ आगच्छ आत्ममंत्रान् रक्ष रक्ष परमंत्रान् छिन्द छिन्द मम सर्व समीहितं कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

मंत्र सिद्धि के बाद प्रतिदिन ३ बार।

३. प्रयोग विधि

मंत्र सिद्धि के लिए साढ़े बारह हजार का जप करें।

४. परिणाम

परकृत तांत्रिक उपद्रव शांत हो जाते हैं।

१७ जून
२००२

चिंताहरण (१)

१. मंत्र

ॐ नमो चारणाणं जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय स्वाहा ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

आनंद केन्द्र पर ध्यान केन्द्रित कर जप का प्रयोग करें।

४. परिणाम

सहेतुक तथा अहेतुक होने वाली चिन्ताओं से मुक्ति।

१८ जून
२००२

ॐ

चिन्ताहरण (२)

१. समस्या

निरंतर चिन्ता, मानसिक अशांति।

२. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं भगवते पार्श्वनाथाय हर हर स्वाहा।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. परिणाम

चिन्तामुक्ति।

१६ जून
२००२

ॐ

दुःखभंजक

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अरिष्टनेमिनाथाय नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

दुःख का नाश होता है।

२० जून
२००२

विघ्न-बाधा निवारक (१)

१. मंत्र

उदधि अगन अरि विष तणो
सकल विघ्न परिहारी हो।
सत्यशील प्रभावे जिन कह्यो
दशमां अंग मझारी हो।।
तिमज भजन तंत सारी हो
परम मंत्र समधारी हो॥
अ. भी. रा. शि. को उदारी हो॥

२. मंत्र संख्या

१ माला।

३. परिणाम

अग्नि, जल और विष से रक्षा होती है।

२१ जून
२००२

विघ्न-बाधा निवारक (२)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं

नमिऊण असुर सुर गरुल भुयंग परिवंदिय गय किलेसे

अरिहे सिद्धायरिये उवज्झाय सव्व साहूणं।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

३ मास तक प्रतिदिन ६ माला।

४. परिणाम

सर्व कल्याणकारक।

२२ जून
२००२

ॐ

विघ्नहरण

१. मंत्र

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रुं ह्रूं नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

इस मंत्र के जप से आने वाली बाधाओं और विघ्नों का निवारण होता है।

२३ जून
२००२

बाधा-निवारण

१. मंत्र

ॐ थंभेइ जलं जलणं चिंतियमित्तेण पंच णमोक्कारो अरिमारिचोरराउलघोरउवसग्गं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः विणासेइ स्वाहा।

२. मंत्र

ॐ ह्रूं क्षूं फट् किरीट घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिंद छिंद परमंत्रान् भिंद भिंद क्षः क्षः फट् स्वाहा।

३. प्रयोग विधि

पहले मंत्र का ९ बार और दूसरे मंत्र का ५ बार उच्चारण करें।

४. परिणाम

विघ्न-बाधाएं दूर होती हैं।

२४ जून
२००२

विघ्न निवारक (१)

१. मंत्र

ॐ पार्श्वनाथाय ह्रीं नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

सवा लाख का जप कर मंत्र को सिद्ध करें।

४. परिणाम

विघ्न-बाधाओं का शमन होता है।

२५ जून
२००२

विघ्न निवारक (२)

१. समस्या

बार-बार बाधाओं से प्रताड़ित होना।

२. मंत्र

गुण गातां मन गह-गहै
सुख संपति जाण।
विघन मिटै समरण कियां
पामै परम कल्याण॥

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. परिणाम

विघ्न-बाधाएं दूर होती हैं। मानसिक प्रसन्नता बढ़ती है।

२६ जून
२००२

विघ्न निवारक (३)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं अर्हं श्री पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र-पद्मावतीसहिताय अतुलबलवीर्य-पराक्रमाय अट्टे मट्टे क्षुद्रविघट्टे क्षुद्रान् स्तंभय स्तंभय दुष्टान् चूरय चूरय शत्रून् संहारय संहारय मम वांछितं कुरु कुरु स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन एक बार।

३. प्रयोग विधि

अपेक्षा होने पर ६ बार।

४. परिणाम

उपद्रव शांत होता है।

२७ जून
२००२

विघ्न निवारक (४)

१. मंत्र

ॐ भिक्षु।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ से २१ माला।

३. प्रयोग विधि

जब भी समय मिले, मंत्र का मानसिक जप करते रहें।

४. परिणाम

सर्वत्र मंगल होता है, विघ्न-बाधाओं का निवारण होता है।

२८ जून
२००२

विघ्न निवारक (५)

१. मंत्र

ॐ अ. भी. रा. शि. को. नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

संकट के समय उच्च स्वर से मंत्र का जप करें।

४. परिणाम

विघ्न-बाधाएं समाप्त होती हैं।

२६ जून
२००२

विघ्न निवारक (६)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमिऊण पास विसहर वसह जिण फुलिंग ह्रीं श्रीं अर्हं नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

इसकी साधना पौष वदी १० से प्रारंभ करें। पद्मासन में बैठकर, पूर्वोत्तर दिशा में जप करें। २७ दिन तक उपसर्गहर स्तोत्र का २७ बार पाठ करें। २७ दिन तक यह क्रम चालू रखें।

४. परिणाम

विघ्नों का निवारण होता है।

३० जून
२००२

संकट से मुक्ति

१. समस्या

विपत्ति का समय।

२. मंत्र

ॐ ह्रीं लौं णमो लोए सव्वसाहूणं।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन एक माला।

३. परिणाम

संकट दूर होता है।

१ जुलाई
२००२

ॐ

संकटमोचक (१)

१. समस्या

अकस्मात् विपत्ति का आगमन।

२. मंत्र

ॐ णमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय क्षेमंकराय ह्रीं नमः।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. परिणाम

अचानक आने वाला संकट दूर होता है।

२ जुलाई
२००२

संकटमोचक (२)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं नमः क्ष्वीं स्वाहा।

२. प्रयोग विधि

पहले ९ बार नमस्कार महामंत्र पढ़कर बाद में नियमित ९ माला २१ दिन तक फेरें।

३. परिणाम

राज्य संबंधी संकट दूर होता है।

३ जुलाई
२००२

ॐ

संघीय कष्ट निवारक

१. मंत्र

मुणिन्द मोरा, दवदन्ती जयवन्ती सार।
अनुकूल बलि इन्द्राणी रे, स्वामी मोरा॥
सहायका रे, मोरा स्वाम॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

संघ पर आने वाला कष्ट दूर होता है और संघ में सदा मंगल विद्यमान रहता है।

४ जुलाई
२००२

ॐ

कुण्ठानाशक

१. समस्या

विषादग्रस्त होना।

२. मंत्र

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. परिणाम

कुण्ठा, निराशा दूर होती है।

५ जुलाई
२००२

क्लेशनाशक (१)

१. मंत्र

ॐ अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

मंत्र का १ लाख जप कर सिद्ध करें, फिर प्रतिदिन जप करें।

४. परिणाम

क्लेश का नाश होता है।

६ जुलाई
२००२

क्लेशनाशक (२)

१. समस्या

पारिवारिक क्लेश।

२. मंत्र

अहो प्रभु! अजित जिनेश्वर आपरो
ध्याऊं ध्यान हमेश हो।
अहो प्रभु! अशरण शरण तूं ही सही
मेटण सकल कलेश हो॥

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. परिणाम

पारिवारिक कलह का निवारण होता है।

७ जुलाई
२००२

कलह-शमन

१. मंत्र

ॐ नमो पदानुसारीणं जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय स्वाहा ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

विशुद्धि केन्द्र पर ध्यान केन्द्रित कर जप का प्रयोग करें।

४. परिणाम

व्यक्ति के साथ कलह शांत होता है।

८ जुलाई
२००२

ॐ

राज्याभियोग-निवारण

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड-दंडचंडोपग्रहशांतिकराय धरणेन्द्रपद्मावतीसं-सेविताय अतुलबलवीर्यपराक्रमाय श्रीमते भगवते चिन्तामणिपार्श्वनाथाय नमो नमः......मम उपरि समागतं राज्याभियोगं यथाशीघ्रं निवारय निवारय श्रीं आत्मविद्यां रक्ष रक्ष श्रीं ह्रीं ऐं हुं फट् स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

१ माला।

३. प्रयोग विधि

समस्या के समय मंत्र का प्रयोग करें।

४. परिणाम

इससे अभियोग का निवारण होता है।

६ जुलाई
२००२

व्यन्तरकृत उपद्रव का शमन

१. मंत्र

ॐ ॐ क्रों क्रीं ह्रां ह्रीं

उसभमजियं च वंदे संभवमभिनंदणं च सुमइं च॥

पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे॥

२. मंत्र संख्या

२०१६ बार।

३. प्रयोग विधि

पद्मासन, उत्तर दिशा, एकासन में सोमवार से प्रारंभ कर सात दिन में जप पूरा करें। असत्य भाषण नहीं करना।

४. परिणाम

सभी लोग वशवर्ती होते हैं। व्यन्तर आदि के उपद्रव नष्ट होते हैं।

१० जुलाई
२००२

ॐ

व्यन्तर दोष निवारक

१. मंत्र

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः
कश्चिन्मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला ।

३. प्रयोग विधि

१०८ दिन तक निरन्तर जप करें।

४. परिणाम

व्यन्तरकृत दोष का निवारण होता है। लोग वश में होते हैं।

११ जुलाई
२००२

व्यन्तर बाधा निवारक

१. समस्या

व्यन्तरकृत उपद्रव।

२. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनावृतविद्यायै णमो अरहंताणं ह्रौं सर्व शांतिर्भवतु ॐ णमो अर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।

३. प्रयोग विधि

२१ हजार जप कर मंत्र सिद्ध करें।

४. परिणाम

व्यन्तर देवताकृत विघ्न दूर होता है।

१२ जुलाई
२००२

ॐ

प्रेत-बाधा-निवारण

१. समस्या

शाकिनीकृत दोष।

२. मंत्र

श्रीं णमो उवज्झायाणं
श्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं
श्रीं णमो आयरियाणं
श्रीं णमो सिद्धाणं
श्रीं णमो अरहंताणं।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन एक माला।

४. प्रयोग विधि

मंत्र सिद्धि के लिए १२००० का जप करें।

५. परिणाम

शाकिनीकृत दोष का निवारण।

१३ जुलाई
२००२

भूत-प्रेत निवारक

१. मंत्र

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्

नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।

सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं

प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशुजालम्॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

व्यन्तरकृत दोष दूर होता है। शरीर में प्रविष्ट भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी आदि निकल कर भाग जाते हैं।

१४ जुलाई
२००२

ॐ

भूत-प्रेत उपद्रव-निवारण

१. समस्या

भूत, प्रेत आदि का उपद्रव।

२. मंत्र

ॐ ह्रीं पुव्वजिणाणं ओहिजिणाणं परमोहिजिणाणं अणंतोहिजिणाणं सामन्नकेवलीणं भवत्थकेवलीणं नमः स्वाहा।

३. प्रयोग विधि

उपद्रव के समय २ माला फेरें।

४. परिणाम

भूत, प्रेत आदि का विघ्न समाप्त होता है।

१५ जुलाई
२००२

भूतादि उपद्रव-निवारण

१. समस्या

भूत-प्रेतजनित विघ्न।

२. मंत्र

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा प्रेतादिकान् नाशय नाशय ठः ठः स्वाहा।

३. मंत्र संख्या

४१ बार।

४. प्रयोग विधि

भूत, प्रेत आदि का उपद्रव होने पर मंत्र का प्रयोग करें।

४. परिणाम

भूत, प्रेत आदि से होने वाली बाधाएं शांत होती हैं।

१६ जुलाई
२००२

भूतादि से रक्षा

१. मंत्र

णमो भगवते पार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेन्द्र-पद्मावतीसहिताय अट्टे मट्टे विघट्टे भूतान् स्तंभय स्तंभय स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

भूत आदि की विपत्ति के समय मंत्र का जप करें।

४. परिणाम

भूत आदि का विघ्न दूर होता है।

१७ जुलाई
२००२

तांत्रिक दोष और रोग-निवारण

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं कामण कामणाय विस्फोटकाय स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

२१ बार।

३. परिणाम

तांत्रिककृत उपद्रव दूर होता है। घुटनों का दर्द और टखनों का दर्द समाप्त होता है। वात, पित्त और कफ का संतुलन होता है।

१८ जुलाई
२००२

बंदी मोक्ष

१. मंत्र

ब्लौं णमो लोए सव्वसाहूणं ब्लौं णमो उवज्झायाणं ब्लौं णमो आयरियाणं ब्लौं णमो सिद्धाणं ब्लौं णमो अरहंताणं।

२. मंत्र संख्या

१ माला।

३. प्रयोग विधि

कारागृह में प्रतिदिन प्रातः-सायं जप करें।

४. परिणाम

अपराध मनोवृत्ति का परिवर्तन और कारावास से मुक्ति।

१९ जुलाई
२००२

ॐ

बंधनमुक्ति (१)

१. मंत्र

आपाद-कण्ठमुरुशृंखल-वेष्टितांगा
गाढं बृहन्निगडकोटि-निघृष्टजंघाः।
त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः
सद्यः स्वयं विगतबन्धभया भवन्ति॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

कारावास में एकासनपूर्वक मंत्र का जप करें।

४. परिणाम

जेल से जल्दी छुटकारा मिलता है।

२० जुलाई
२००२

बंधनमुक्ति (२)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्डस्वामिन्! मम बंदिमोक्षं कुरु कुरु श्रीं ह्रीं क्लीं स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

सात दिन तक जप करें।

४. परिणाम

बंधन से मुक्त होता है।

२१ जुलाई
२००२

भयहर

१. मंत्र

ॐ णमो णमो ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रः यः क्षः ह्रीं फट् फट् स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन २१ बार।

३. प्रयोग विधि

२१ दिन तक प्रतिदिन १ माला।

४. परिणाम

भय दूर होता है। सुरक्षा और शांति का वातावरण निर्मित होता है।

२२ जुलाई
२००२

भय निवारक

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं मल्लिनाथाय नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

चोर आदि का भय दूर होता है।

२३ जुलाई
२००२

ॐ

भयमुक्ति

१. मंत्र

श्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं

श्रीं णमो सिद्धाणं

श्रीं णमो आयरियाणं

श्रीं णमो उवज्झायाणं

श्रीं णमो अरहंताणं।

२. मंत्र संख्या

तात्कालिक स्थिति में २१ बार।

३. प्रयोग विधि

मंत्र सिद्धि के लिए ३ माह तक १ माला।

४. परिणाम

व्याघ्र-भय-निवारण।

२४ जुलाई
२००२

ॐ

अभय प्रदायक (१)

१. समस्या

भय की स्थिति।

२. मंत्र

णमो अभयदयाणं।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. प्रयोग विधि

जप करते समय चित्त को आनन्द केन्द्र पर केन्द्रित करें। गुलाबी रंग का ध्यान करें।

५. परिणाम

अभय की शक्ति का विकास होता है।

२५ जुलाई
२००२

अभय प्रदायक (२)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऋषभदेवाय नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

सब प्रकार का भय दूर होता है।

२६ जुलाई
२००२

भय और विरोध का शमन

१. समस्या

चोरी, वैर-विरोध।

२. मंत्र

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं।

३. मंत्र संख्या

२१ बार अथवा १०८ बार।

४. प्रयोग विधि

मंत्र का जप कर चारों दिशाओं में फूंक मारें।

५. परिणाम

चोर और वैरी द्वारा कृत समस्या से मुक्ति।

२७ जुलाई
२००२

अग्निभयनाशक

१. मंत्र

निर्धूमवर्तिरपवर्जित-तैलपूरः
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ! जगत्प्रकाशः॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

अग्नि का भय शांत होता है। चारों तरफ से सफलताएं मिलती हैं। शत्रु पर विजय प्राप्त होती है।

२८ जुलाई
२००२

ॐ

अग्निभय निवारक

१. मंत्र

कल्पान्तकाल-पवनोद्धत-वह्निकल्पं
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम्।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं
त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम्॥

२. मंत्र संख्या

२१ बार।

३. परिणाम

अग्नि का भय दूर होता है।

२९ जुलाई
२००२

सर्वभय निवारक

१. मंत्र

कुन्दावदात-चलचामर-चारुशोभं
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम्।
उद्यच्छशांक-शुचिनिर्झर-वारिधार-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम्॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

मंत्र जप कर गांव की ओर प्रस्थान करना।

४. परिणाम

मार्गवर्ती सिंह, चोर आदि का भय नहीं रहता, यात्रा निर्विघ्न होती है।

३० जुलाई
२००२

ॐ

सिंह-भय निवारक

१. मंत्र

भिन्नेभ-कुम्भ-गलदुज्ज्वल-शोणिताक्त-
मुक्ताफल-प्रकर-भूषितभूमिभागः।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि
नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते॥

२. मंत्र संख्या

२१ बार।

३. परिणाम

सिंह का भय नहीं रहता।

३१ जुलाई
२००२

ॐ

हस्तिमद निवारक

१. मंत्र

श्च्योतन् मदाविलविलोलकपोलमूल-
मत्तभ्रमद्-भ्रमरनाद-विवृद्धकोपम्।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम्॥

२. मंत्र संख्या

२१ बार।

३. परिणाम

हाथी का मद दूर होता है, वह वशवर्ती हो जाता है।

१ अगस्त
२००२

चोर-भय निवारक

१. मंत्र

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

चोरों का भय दूर होता है।

२ अगस्त
२००२

ॐ

मार्गवर्ती चोर-भय निवारक

१. समस्या

मार्ग में चोर का भय।

२. मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं आमिणि मोहिणी मोहय मोहय स्वाहा।

३. मंत्र संख्या

१ माला।

४. परिणाम

मार्ग में आने वाले चोर के भय का निवारण होता है।

३ अगस्त
२००२

चोरी के भय से मुक्ति

१. समस्या

चोरी की।

२. मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं धणु महाधणु स्वाहा।

३. मंत्र संख्या

२१ दिन तक १ माला जप कर सिद्ध करें।

४. प्रयोग विधि

इस मंत्र का ललाट पर ध्यान करें। मंत्र को लिख कर दाएं हाथ में रखकर मुट्ठी कस कर बांधें।

५. परिणाम

चोर भाग जाते हैं।

४ अगस्त
२००२

जल-उपद्रव-हरण

१. मंत्र

वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र! शशांककान्तान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या।
कल्पान्त-काल-पवनोद्धतनक्रचक्रं,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम्॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

जल का भय दूर होता है।

५ अगस्त
२००२

जल-भय निवारक

१. मंत्र

अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र-
पाठीन-पीठभयदोल्वणवाडवाग्नौ।
रंगत्तरंग-शिखरस्थित-यानपात्रास्
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति॥

२. मंत्र संख्या

२१ बार।

३. परिणाम

समुद्र का भय दूर होता है। जल का भय भी समाप्त होता है।

६ अगस्त
२००२

ॐ

युद्ध-भय निवारक

१. मंत्र

वल्गत्तुरंग-गजगर्जित-भीमनाद-
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम्।
उद्यद्दिवाकरमयूख-शिखापविद्धं
त्वत्कीर्तनात् तम इवाशु भिदामुपैति॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

युद्ध का भय दूर होता है।

७ अगस्त
२००२

यात्रा-बाधा निवारक

१. समस्या

यात्रा में विघ्नों से प्रताड़ित होना।

२. मंत्र

ॐ णमो भगवईए सुअदेवयाए सव्वेसिं पवयणदेवयाणं दसण्हं दिसापालाणं पचण्हं लोग-पालाणं ऐं ह्रीं श्रीं नमः।

३. प्रयोग विधि

मंत्र का ७ बार उच्चारण कर पहने हुए कपड़े में गांठ लगाएं।

४. परिणाम

मार्ग में चोर, बाघ आदि का उपद्रव समाप्त होता है।

८ अगस्त
२००२

यात्रा-प्रस्थान

१. मंत्र

ॐ फुं ब्लीं ह्रीं ऐं नमः ठः ठः ठः स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

२१ बार।

३. प्रयोग विधि

यात्रा के लिए प्रस्थान करते समय मंत्र का उच्चारण करें।

४. परिणाम

यात्रा की विघ्न-बाधाएं समाप्त होती हैं।

६ अगस्त
२००२

ॐ

विजय (१)

१. मंत्र

ॐ हंसः ॐ ह्रीं अर्हं ऐं श्रीं अ सि आ उ सा नमः।

२. प्रयोग विधि

मंत्र का २१ बार मानसिक जप करें।

३. परिणाम

विवाद में विजय होती है।

१० अगस्त
२००२

विजय (२)

१. मंत्र

एगे जिए जिया पंच-पंच जिए जिया दस।
दसहा उ जिणित्ताणं, सव्वसत्तू जिणामहं॥

२. मंत्र संख्या

१ माला।

३. प्रयोगविधि

अपेक्षानुसार मंत्र का जप करें।

४. परिणाम

विवाद या मुकदमे में विजय प्राप्त होती है।

११ अगस्त
२००२

विजय (३)

१. मंत्र

अ सि आ उ सा।

२. मंत्र संख्या

२१ आवृत्तियां।

३. प्रयोग विधि

मंत्र का जप करते समय निम्न स्थानों पर ध्यान केन्द्रित करें।

अ	मस्तक
सि	मुख
आ	कंठ
उ	हृदय
सा	चरण

४. परिणाम

वाद-विजय।

१२ अगस्त
२००२

ॐ

विजय प्रदायक (१)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं कुन्थुनाथाय नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

शत्रु पर विजय प्राप्त होती है।

१३ अगस्त
२००२

विजय प्रदायक (२)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अरनाथाय नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

सर्वत्र विजय मिलती है।

१४ अगस्त
२००२

ॐ

विजय प्रदायक (३)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अजितनाथाय नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

सब स्थानों में विजय प्राप्त होती है।

१५ अगस्त
२००२

ॐ

विजय-प्राप्ति

१. मंत्र

कुन्ताग्रभिन्न-गजशोणित-वारिवाह-
वेगावतार-तरणातुरयोध-भीमे।
युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षास्
त्वत्पाद-पंकजवनाश्रयिणो लभन्ते।

२. मंत्र संख्या

२१ बार।

३. परिणाम

युद्ध में विजय-लक्ष्मी का वरण होता है।

१६ अगस्त
२००२

ॐ

सर्वत्र विजय

१. मंत्र

मत्तद्विपेन्द्र-मृगराज-दवानलाहि-
संग्राम-वारिधि-महोदर-बन्धनोत्थम्।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

खड़े-खड़े २१ दिन तक जप करना।

४. परिणाम

सब दिशाओं में विजय होती है।

१७ अगस्त
२००२

ॐ

शत्रु-विजय (१)

१. मंत्र

ॐ णमो जिणाणं ॐ णमो उग्गतवाणं ॐ णमो दित्ततवाणं ॐ णमो महातवाणं ॐ णमो घोरगुणाणं ॐ णमो घोरपरक्कमाणं ॐ णमो घोरगुणब्रह्मचारिणं झौं झौं स्वाहा।

२. प्रयोग विधि

२१ दिन तक प्रतिदिन १ माला और विशेष परिस्थिति के समय २१ बार।

३. परिणाम

इससे विरोधी पर विजय प्राप्त होती है।

१८ अगस्त
२००२

शत्रु-विजय (२)

१. मंत्र

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषैस्
त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश!
दोषैरुपात्त-विविधाश्रय-जातगर्वैः
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

काली माला से १०८ बार मंत्र जप करें।

४. परिणाम

शत्रु पर विजय प्राप्त होती है।

१६ अगस्त
२००२

ॐ

शत्रु-विजय (३)

१. मंत्र

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र!
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा
तादृक् कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि॥

२. मंत्र संख्या

२१ बार।

३. परिणाम

शत्रु वश में होता है।

२० अगस्त
२००२

ॐ

शत्रुनाशक

१. मंत्र

यः संस्तुतः सकल-वाङ्मयतत्त्वबोधा-
दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोक-नाथैः।
स्तोत्रैर् जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

शत्रु शांत होते हैं तथा सिरदर्द दूर होता है।

२१ अगस्त
२००२

अपराभव

१. मंत्र

तस्कर त्रास न पराभवै

चर्चा में जयकारी हो।

भूत रोग आपद हरै

अघदल रूप परिहारी हो।

अ. भी. रा. शि. को उदारी हो॥

२. संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

चोरों और लुटेरों से रक्षा होती है। वाद-विवाद में जय प्राप्त होती है। भूत-प्रेत की बाधा दूर होती है।

२२ अगस्त
२००२

वैर का समापन

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वचंद्राय नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन २१ बार। अथवा त्रिसन्ध्या में सात बार।

३. प्रयोग विधि

मंत्र पढ़कर मुंह पर हाथ फेरें।

४. परिणाम

शत्रु भी मित्र बनता है। प्रशासन के क्षेत्र में विजय होती है।

२३ अगस्त
२००२

ॐ

स्तम्भन (१)

१. मंत्र

ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ॐ णमो उवज्झायाणं ॐ णमो आयरियाणं ॐ णमो सिद्धाणं ॐ णमो अरहंताणं।

२. मंत्र संख्या

७ आवृत्ति।

३. प्रयोग विधि

समस्या के समय एकाग्रता के साथ मंत्र का अभ्यास करें।

४. परिणाम

अग्नि का स्तम्भन।

२४ अगस्त
२००२

स्तम्भन (२)

१. मंत्र

ॐ णमो सिद्धाणं कुंडे कुंडे स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

दुष्ट अथवा वैरी का स्तम्भन होता है।

२५ अगस्त
२००२

उच्चाटन

१. मंत्र

ॐ षां षीं श्रीं ह्रीं शत्रुं उच्चाटय उच्चाटय स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन २१ बार।

३. परिणाम

शत्रुजनित भय दूर होता है।

२६ अगस्त
२००२

वशीकरण (१)

१. मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ अ सि आ उ सा नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

मंत्र का सवा लाख जप कर सिद्ध करें।

४. परिणाम

आकर्षण।

२७ अगस्त
२००२

वशीकरण (२)

१. समस्या

मानसिक दूरी।

२. मंत्र

ॐ ह्रीं पैं णमो सिद्धाणं।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला ।

४. परिणाम

अपने अनुकूल बना लेना ।

२८ अगस्त
२००२

ॐ

क्षुद्र-मुख स्तम्भन

१. मंत्र

ॐ णमो भगवते श्रीपार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेन्द्र-वैरुट्याय क्षुद्रान् मुखं स्तंभय स्तंभय स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

सर्प, बिच्छू आदि पास में नहीं आते।

२९ अगस्त
२००२

आकर्षण (१)

१. मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं ॐ णमो सिद्धाणं

ॐ णमो आयरियाणं ॐ णमो उवज्झायाणं

ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन ७ आवृत्ति।

३. प्रयोग विधि

मंत्र के अभ्यास काल में प्रत्येक पद के साथ तादात्म्य का अनुभव करें।

४. परिणाम

स्वयं में आकर्षण पैदा होता है।

३० अगस्त
२००२

ॐ

आकर्षण (२)

१. मंत्र

ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रीं णमो उवज्झायाणं ह्रीं णमो आयरियाणं ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं णमो अरहंताणं।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

उच्च पदस्थ व्यक्ति आकृष्ट होता है।

३१ अगस्त
२००२

आकर्षण (३)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रेयांसनाथाय नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन एक माला।

३. परिणाम

सारे प्राणी आकर्षित हो जाते हैं।

१ सितम्बर
२००२

ॐ

विवेक का विकास

१. मंत्र

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं

गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम्।

विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति

विद्योतयज्जगदपूर्व-शशांकबिम्बम्॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

मन की भ्रांति दूर होती है। शत्रु का स्तम्भन होता है और झगड़ा समाप्त होता है। विवेक का विकास होता है।

२ सितम्बर
२००२

कामण निवारक

१. मंत्र

किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा
युष्मन्मुखेन्दु-दलितेषु तमस्सु नाथ!।
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके
कार्यं कियज्जलधरैर् जलभारनम्रैः॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

जादू, कामण, मूठ, उच्चाटन आदि का भय नहीं रहता।

३ सितम्बर
२००२

चोर-स्तम्भन

१. समस्या

चोरी का भय, मार्ग का भय।

२. मंत्रह्न

वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि
निःशेष-निर्जित-जगत्-त्रितयोपमानम्।
बिम्बं कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य
यद् वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम्॥

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. परिणाम

चोर चोरी नहीं कर पाते, मार्ग में कोई भय नहीं रहता, लक्ष्मी प्राप्त होती है।

४ सितम्बर
२००२

राजकीय सम्मान

१. मंत्र

छत्रत्रयं तव विभाति शशांककान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकर-प्रतापम्।
मुक्ताफल-प्रकरजाल-विवृद्धशोभं
प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

राज्य में सम्मान मिलता है।

५ सितम्बर
२००२

राज्य-सम्मान (१)

१. मंत्र

ॐ ऐं ॐ अं नमः।

२. मंत्र संख्या

९ बार।

३. प्रयोग विधि

राजकीय कार्यों के लिए प्रस्थान करते समय मंत्र का जप करें।

४. परिणाम

राज्य में सर्वत्र प्रतिष्ठा प्राप्त होती है, सम्मान मिलता है।

६ सितम्बर
२००२

राज्य-सम्मान (२)

१. मंत्र

ॐ आं क्रौं क्ष्म्ल्व्र्यूं नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन २१ बार।

३. परिणाम

राज्य में सम्मान प्राप्त होता है।

७ सितम्बर
२००२

अपहृत व्यक्ति का पुनरागमन

१. मंत्र

ॐ ह्रीं ठः ठः स्वाहा।

२. प्रयोग विधि

मंगलवार से प्रारंभ कर एक सप्ताह तक प्रतिदिन १००० जप।

३. परिणाम

गुम हुआ व्यक्ति अथवा आवेश में घर से चला गया व्यक्ति पुनः आ जाता है अथवा उसका सुख-संवाद मिल जाता है।

८ सितम्बर
२००२

खोई हुई वस्तु की प्राप्ति

१. मंत्र

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्वा पयः शशिकरद्युति-दुग्धसिंधोः
क्षारं जलं जलनिधेरसितुं क इच्छेत्॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

सफेद माला से खड़े-खड़े जप करें।

४. परिणाम

खोई हुई वस्तु की प्राप्ति होती है, वांछित फल की प्राप्ति होती है।

६ सितम्बर
२००२

अनुकूल स्थिति का निर्माण

१. समस्या

प्रतिकूल परिस्थिति।

२. मंत्र

ह्रीं णमो उवज्झायाणं

ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं

ह्रीं णमो आयरियाणं

ह्रीं णमो सिद्धाणं

ह्रीं णमो अरहंताणं

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. प्रयोग विधि

मंत्र सिद्धि के लिए १२००० का जप।

५. परिणाम

जन और जननेता की अनुकूलता।

१० सितम्बर
२००२

स्वप्न में सूचना (१)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं नमः क्ष्वीं स्वाहा।

२. प्रयोग विधि

मंत्र को चन्दन से हाथ में लिखें। १००८ बार जप करें।

३. परिणाम

स्वप्न में शुभ-अशुभ की सूचना मिल जाती है।

११ सितम्बर
२००२

ॐ

स्वप्न में सूचना (२)

१. मंत्र

सिद्धाणं णमो किच्चा संजयाणं च भावओ।

अत्थधम्मगइं तच्चं अणुसट्ठिं सुणेह मे॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

मध्य रात्रि के बाद चारों दिशाओं में एक-एक माला फेरें।

४. परिणाम

स्वप्न में सारी सूचनाएं मिलती हैं।

१२ सितम्बर
२००२

स्वप्न में निर्देश

१. मंत्र

ॐ णमो जिणाणं ॐ णमो आगासगामीणं नमः झौं झौं स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

प्रवाल की माला, सफेद वस्त्र, रात्रि में मौन, १००८ बार मंत्र का जप कर मंत्र को सिद्ध करें।

४. परिणाम

स्वप्न में मनोवांछित संकेत प्राप्त होते हैं।

१३ सितम्बर
२००२

स्वप्न में उत्तर (१)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सुपार्श्वनाथाय नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

स्वप्न में प्रश्न का उत्तर प्राप्त होता है।

१४ सितम्बर
२००२

स्वप्न में उत्तर (२)

१. मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं हुलु हुलु कुलु कुलु चुलु चुलु मुलु मुलु स्वाहा।

२. प्रयोग विधि

किसी प्रश्न का उत्तर जानना चाहें तो सोते समय मंत्र को २१ बार जप कर सोएं।

३. परिणाम

स्वप्न में प्रश्न का उत्तर मिल जाता है।

१५ सितम्बर
२००२

ॐ

स्वप्नदोष-निवारण (१)

१. मंत्र

ॐ चले चले चित्तं वीर्यस्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा।

२. प्रयोग विधि

सोने से पहले २१ बार उच्चारण करें।

३. परिणाम

निद्रा में वीर्यपात नहीं होता।

१६ सितम्बर
२००२

स्वप्नदोष-निवारण (२)

१. समस्या

बुरे स्वप्नों का आना।

२. मंत्र

चंदेसु निम्मलयरा।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. प्रयोग विधि

जप का प्रयोग करते समय चित्त को दर्शन केन्द्र पर केन्द्रित करें, हरे रंग का ध्यान करें।

५. परिणाम

दुःस्वप्न का निवारण होता है।

१७ सितम्बर
२००२

क्रोध-उपशमन (१)

१. मंत्र

हर हुं हः सर सुं सः ॐ क्लीं ह्रीं ह्रुं फट् स्वाहा।

२. प्रयोग विधि

जब अपेक्षा हो तब १०८ बार जप करना।

३. परिणाम

इस मंत्र के जप से अत्यधिक क्रोधित व्यक्ति शांत हो जाता है।

१८ सितम्बर
२००२

क्रोध-उपशमन (२)

१. मंत्र

ॐ शांते प्रशांते सर्वक्रोधोपशमनी स्वाहा।

२. प्रयोग विधि

२१ बार मंत्रोच्चारण कर पानी से मुंह का प्रक्षालन करें।

३. परिणाम

जिस व्यक्ति पर क्रोध आया था, उस पर पुनः नहीं आएगा।

१६ सितम्बर
२००२

क्रोध-उपशमन (३)

१. मंत्र

ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्रोधप्रशमनं ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं सः सः स्वाहा।

२. प्रयोग विधि

मंत्र को २१ बार पढ़कर वस्त्र के एक कोने में गांठ लगाकर क्रोधित व्यक्ति के पास जाना।

३. परिणाम

जिसे क्रोध आया था वह शांत हो जाता है।

२० सितम्बर
२००२

आवेश-नियंत्रण

१. मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं ।

२. प्रयोग विधि

मुख में चन्द्रमण्डल के आकार वाले अष्टदल कमल की कल्पना करें। प्रत्येक दल पर एक-एक अक्षर का न्यास करें।

३. कालमान

न्यास किए हुए एक-एक अक्षर पर पांच मिनिट ध्यान करें। फिर पूरे पद पर दस मिनिट का ध्यान करें।

४. परिणाम

आवेश-नियंत्रण, मानसिक शांति।

२१ सितम्बर
२००२

कामवृत्ति पर नियंत्रण

१. समस्या

काम-वासना।

२. मंत्र

असासया भोगपिवास जंतुणो।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. प्रयोग विधि

जप का प्रयोग करते समय चित्त को विशुद्धि केन्द्र पर केन्द्रित करें। नीले रंग का ध्यान करें।

५. परिणाम

काम-वासना पर नियंत्रण होता है।

२२ सितम्बर
२००२

ॐ

अनासक्ति का विकास

१. मंत्र

एगो मे सासओ अप्पा, णाणदंसणसंजुओ।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा॥

२. प्रयोग विधि

प्रारंभ में ९ बार उच्चारण।

९ बार मंद उच्चारण।

फिर मानसिक उच्चारण करें।

४. परिणाम

अनासक्त चेतना का विकास होता है।

२३ सितम्बर
२००२

ॐ

तनावमुक्ति

१. समस्या

तनाव।

२. मंत्र

ॐ क्षौं क्षौं।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. परिणाम

मानसिक तनाव दूर होता है।

२४ सितम्बर
२००२

चिड़चिड़ापन से मुक्ति

१. मंत्र

ह्लूं।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

आनन्द केन्द्र पर हरे रंग का ध्यान करें। मंत्र के साथ तादात्म्य स्थापित करें।

४. परिणाम

चिड़चिड़ापन दूर होता है।

२५ सितम्बर
२००२

उष्माशामक

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं शीतलनाथाय नमः।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

गरमी का ताप उपशांत होता है।

२६ सितम्बर
२००२

ॐ

अग्निशामक

१. मंत्र

ॐ णमो ॐ अर्हं अ सि आ उ सा णमो अरहंताणं नमः।

२. मंत्र संख्या

१ माला।

३. प्रयोग विधि

पात्र में शुद्ध जल लेकर उसमें से एक चुल्लु जल को उपर्युक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर एक रेखा खींच दें। अग्नि उस रेखा से आगे नहीं बढ़ेगी। ऐसे ही शेष दिशाओं में रेखाएं खींचें। अंत में पात्र के जल को १०८ बार अभिमंत्रित कर अग्नि पर छींटे देने से अग्नि शांत हो जाएगी।

४. परिणाम

अग्नि शांत होती है। शारीरिक जलन शांत होती है।

२७ सितम्बर
२००२

दारिद्र्य-ताप-निवारण

१. मंत्र

विघ्न मिटै अरियण हटै
प्रगटै सुख भारी हो।
दलरूप दोहग द्रारिद्र दटै
नाम रटै नर नारी हो।।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

दरिद्रता का ताप दूर होता है और शत्रु से सुरक्षा होती है।

२८ सितम्बर
२००२

रोग निवारक (१)

१. समस्या

शारीरिक पीड़ा।

२. मंत्र

आरोग्ग-बोहिलाभं समाहिवर मुत्तमं दिंतु।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. प्रयोग विधि

लयबद्ध दीर्घश्वास का प्रयोग करें।

५. परिणाम

शारीरिक बाधा का निवारण होता है।

२६ सितम्बर
२००२

रोग निवारक (२)

१. समस्या

शारीरिक बीमारी।

२. मंत्र

ॐ णमो आमोसहिपत्ताणं ॐ णमो खेलोसहिपत्ताणं ॐ णमो जल्लोसहिपत्ताणं ॐ णमो विप्पोसहिपत्ताणं ॐ णमो सव्वोसहिपत्ताणं ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लौं अर्हं नमः।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. प्रयोग विधि

विशेषतः बीमारी के समय मंत्र का प्रयोग करें।

५. परिणाम

आरोग्य बढ़ता है।

३० सितम्बर
२००२

आरोग्यवर्धक

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा नमः सर्वविघ्नरोगोपद्रवविनाशनाय सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

२१ बार।

३. परिणाम

स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

१ अक्टूबर
२००२

आरोग्य (१)

१. समस्या

शारीरिक रोग।

२. मंत्र

क्लीं णमो उवज्झायाणं

क्लीं णमो लोए सव्वसाहूणं

क्लीं णमो आयरियाणं

क्लीं णमो सिद्धाणं

क्लीं णमो अरहंताणं।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन एक माला।

४. प्रयोग विधि

मंत्र सिद्धि के लिए १२००० का जप।

५. परिणाम

शारीरिक रोग का निवारण।

२ अक्टूबर
२००२

आरोग्य (२)

१. मंत्र

ॐ णमो जिणाणं ॐ णमो आमोसहिपत्ताणं नमः झौं झौं स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

शारीरिक स्वस्थता का अनुभव होता है।

३ अक्टूबर
२००२

ॐ

आरोग्य (३)

१. मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं लक्ष्मी कलिकुण्डस्वामिने मम आरोग्यं ऐश्वर्यं कुरु कुरु स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन एक माला।

३. प्रयोग विधि

२१ दिन तक १ माला फेरें ।

४. परिणाम

आरोग्य और सुख-सम्पदा प्राप्त होते हैं।

४ अक्टूबर
२००२

ॐ

आरोग्य (४)

१. मंत्र

उद्भूतभीषणजलोदर-भारभुग्नाः
शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः।
त्वत्पाद-पंकजरजोऽमृतदिग्धदेहा
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

सर्व रोगों का नाश होता है। उपसर्ग भी दूर होते हैं।

५ अक्टूबर
२००२

आरोग्य (५)

१. मंत्र

संती कुंथू अरहो अरिट्ठनेमी जिणिंद पासो य।
समरंताणं णिच्चं सव्वं रोगं पणासेइ॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन २१ बार।

३. प्रयोग विधि

मंत्र का जप कर मुंह पर हाथ फेरें।

४. परिणाम

सर्व रोगों का नाश होता है।

६ अक्टूबर
२००२

ॐ

प्रतिरोधात्मक क्षमता का विकास

१. समस्या

शारीरिक रोग।

२. जप-मंत्र

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं।

३. चैतन्य केन्द्र

शक्ति केन्द्र।

४. प्रयोग विधि

शक्ति केन्द्र पर ध्यान केन्द्रित कर दीर्घ-श्वास का प्रयोग करें। जप-मंत्र का मंद उच्चारण अथवा मानसिक जप करें।

५. कालमान

५ मिनिट से ३० मिनिट तक।

६. परिणाम

रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होता है।

७ अक्टूबर
२००२

ॐ

उपशम

१. समस्या

रोग और उत्तेजना ।

२. मंत्र

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं।

३. चैतन्य केन्द्र

शक्ति केन्द्र।

४. प्रयोग विधि

शक्ति केन्द्र पर नीले रंग का ध्यान करें। दीर्घश्वास का प्रयोग करें। जप्य मंत्र का मंद उच्चारण एवं मानसिक जप करें।

५. कालमान

५ मिनिट से ३० मिनिट तक।

६. परिणाम

आरोग्य और उपशम का विकास होता है।

८ अक्टूबर
२००२

शक्तिशाली नाड़ीतन्त्र

१. समस्या

नाड़ीतन्त्र का दौर्बल्य।

२. मंत्र

ॐ हंसः।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. प्रयोग विधि

पूरे शरीर पर पीले रंग का ध्यान करते हुए मंत्र का जप करें।

५. परिणाम

नाड़ीतन्त्र शक्तिशाली बनता है।

६ अक्टूबर
२००२

ज्वरनाश (१)

१. समस्या

ज्वर।

२. मंत्र

ॐ णमो भगवते णमो अरहंताणं णमो ओहिजिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रीं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

३. मंत्र संख्या

१ माला।

४. परिणाम

ज्वरनाश।

१० अक्टूबर
२००२

ज्वरनाश (२)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं ॐ ह्रीं श्रीं णमो उवज्झायाणं ॐ ह्रीं श्रीं णमो आयरियाणं ॐ ह्रीं श्रीं णमो सिद्धाणं ॐ ह्रीं श्रीं णमो अरहंताणं।

२. मंत्र संख्या

१ माला।

३. प्रयोग विधि

नए वस्त्र के गांठ लगाकर १०८ बार जप करें।

४. परिणाम

पुराना ज्वर समाप्त होता है।

११ अक्टूबर
२००२

ॐ

ज्वरनाश (३)

१. समस्या

ज्वर।

२. मंत्र

ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ॐ णमो उवज्झायाणं ॐ णमो अरहंताणं ऐं ह्रीं नमः।

३. मंत्र संख्या

२१ अथवा १०८ बार।

४. प्रयोग विधि

मंत्र का जप कर पछेवड़ी (उत्तरीय) के चारों कोनों पर गांठ देकर रोगी को ओढ़ाएं।

५. परिणाम

ज्वरनाश।

१२ अक्टूबर
२००२

ज्वरनाश (४)

१. समस्या

शरीर का तापमान बढ़ना।

२. मंत्र

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं एकाह्निक द्वयाह्निक त्रयाह्निक, चातुर्थिक महाज्वर क्रोधज्वर भयज्वर कामज्वर कलितरव महावीरान् बंध बंध ह्रां ह्रीं फट् स्वाहा।

३. प्रयोग विधि

मंत्र का जप कर, नए वस्त्र पर गांठ लगा कर रोगी के सिर के नीचे रखने से शरीर का ताप दूर होता है। नींद सुखद आती है।

४. परिणाम

ज्वर का समाप्त होना।

१३ अक्टूबर
२००२

रक्तचाप-संतुलन

१. समस्या

उच्च या निम्न रक्तचाप।

२. मंत्र

ॐ।

३. मंत्र संख्या

२१ बार।

४. प्रयोग विधि

उच्च रक्तचाप होने पर शरीर पर नीले रंग का ध्यान करते हुए तथा निम्न रक्तचाप होने पर दर्शन केन्द्र पर लाल रंग का ध्यान करते हुए ॐ का जप करें।

५. परिणाम

उच्च रक्तचाप और निम्न रक्तचाप संतुलित हो जाता है।

१४ अक्टूबर
२००२

सिरदर्द-चिकित्सा (१)

१. मंत्र

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं
ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनंगकेतुम्।
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः॥

२. मंत्र संख्या

२१ बार।

३. प्रयोग विधि

सिरदर्द के समय मंत्र का उच्चारण करें।

४. परिणाम

सिर की पीड़ा दूर होती है।

१५ अक्टूबर
२००२

सिरदर्द-चिकित्सा (२)

१. समस्या

निरन्तर सिर का दर्द।

२. मंत्र

ॐ णमो परमोहिजिणाणं ह्रां ह्रीं।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. प्रयोग विधि

माला जपते समय पास में जल रखें। उसे अभिमंत्रित कर रोगी को पिलाएं।

५ परिणाम

सिरदर्द दूर होता है।

१६ अक्टूबर
२००२

सिरदर्द-चिकित्सा (३)

१. मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं ॐ णमो सिद्धाणं ॐ णमो आयरियाणं ॐ णमो उवज्झायाणं ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ॐ णमो णाणाय ॐ णमो दंसणाय ॐ णमो चरित्ताय ॐ ह्रीं त्रैलोक्यवश्यंकरी ह्रीं स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

१ माला।

३. प्रयोग विधि

१०८ बार मंत्र को जल से अभिमंत्रित कर रोगी को पिलाएं।

४. परिणाम

सिर की पीड़ा दूर होती है।

१७ अक्टूबर
२००२

मस्तिष्क-चिकित्सा

१. समस्या

मस्तिष्क संबंधी बीमारी।

२. मंत्र

अ आ।

३. प्रयोग विधि

मस्तक पर अ आ की स्थापना कर जप करें।

४. कालमान

३० मिनिट से ४५ मिनिट तक।

५. परिणाम

मस्तिष्कीय बीमारियां दूर होती हैं।

१८ अक्टूबर
२००२

कर्ण-चिकित्सा

१. समस्या

कान की वेदना।

२. मंत्र

ॐ णमो अणंतोहिजिणाणं ह्रां ह्रीं।

३. मंत्र संख्या

१ माला।

४. परिणाम

कान की वेदना समाप्त होती है।

१९ अक्टूबर
२००२

नेत्र-चिकित्सा (१)

१. समस्या

नेत्र-रोग।

२. मंत्र

इ ई।

३. प्रयोग विधि

दोनों नेत्रों में 'इ ई' की स्थापना करें। मंत्र का साक्षात्कार करें।

४. कालमान

३० मिनिट।

५. परिणाम

नेत्र-रोग समाप्त होता है।

२० अक्टूबर
२००२

नेत्र-चिकित्सा (२)

१. समस्या

नेत्र-पीड़ा।

२. मंत्र

ॐ णमो सव्वोहिजिणाणं ह्रां ह्रीं ।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला ।

४. परिणाम

नेत्र-पीड़ा समाप्त होती है।

२१ अक्टूबर
२००२

ॐ

नेत्र-चिकित्सा (३)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रौं सर्वसंकटनिवारणेभ्यो श्री पार्श्वनाथायक्षेभ्यो नमः स्वाहा।

२. प्रयोग विधि

एक बार मंत्र के उच्चारण के बाद आंख का प्रक्षालन करना। क्रमशः २१ बार इसी विधि का प्रयोग करना।

३. परिणाम

नेत्र-रोग समाप्त होते हैं।

२२ अक्टूबर
२००२

नेत्र-चिकित्सा (४)

१. मंत्र

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश!
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः।
प्रीत्याऽऽत्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम्॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

नेत्र-रोग दूर होते हैं।

२३ अक्टूबर
२००२

ॐ

नेत्र-चिकित्सा (५)

१. मंत्र

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्।
बिम्बं वियद्-विलसदंशुलता-वितानं
तुंगोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

१०८ बार पानी को अभिमंत्रित कर रोगी को पिलाएं।

४. परिणाम

नेत्र-पीड़ा दूर होती है। सर्प आदि का विष उतर जाता है।

२४ अक्टूबर
२००२

दंत-चिकित्सा

१. समस्या

दांत का दर्द ।

२. मंत्र

य र ल व श ष स ह।

३. प्रयोग विधि

दांतों की पंक्ति में मंत्र की स्थापना करें।

४. कालमान

३० मिनिट से ४५ मिनिट तक।

५. परिणाम

पायरिया रोग नष्ट होता है।

२५ अक्टूबर
२००२

हिचकीनाशक

१. मंत्र

ॐ ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

३२ बार।

३. प्रयोग विधि

जिस समय हिचकी आए उस समय मंत्र का प्रयोग करें।

४. परिणाम

हिचकी समाप्त होती है।

२६ अक्टूबर
२००२

ॐ

हिचकी और श्वास-चिकित्सा

१. समस्या

बार-बार हिचकी आना, श्वास फूलना।

२. मंत्र

ॐ णमो बीजबुद्धीणं जिणाणं ह्रां ह्रीं ।

३. मंत्र संख्या

१ माला ।

४. परिणाम

हिचकी बंद होती है। श्वास में जमावट आती है।

२७ अक्टूबर
२००२

ॐ

हृदय रोग-चिकित्सा

१. समस्या

हृदय रोग।

२. मंत्र

क ख ग घ ङ   च छ ज झ ञ   ट ठ ड ढ ण त थ द ध न   प फ ब भ।

३. प्रयोग विधि

हृदय के चारों ओर २४ कमल दल की स्थापना करें। प्रत्येक दल पर मंत्र का एक-एक अक्षर लिखें। मध्य कर्णिका में 'म' की स्थापना करें। मंत्र के प्रत्येक वर्ण का साक्षात् करें।

४. कालमान

३० से ४० मिनिट।

५. परिणाम

हृदय की बीमारी, फुफ्फुस की बीमारी दूर होती है।

२८ अक्टूबर
२००२

ॐ

उदर-चिकित्सा (१)

१. मंत्र

ॐ कले विकले स्वाहा।

२. प्रयोग विधि

२१ बार मंत्र का उच्चारण कर पेट पर हाथ फेरें।

३. परिणाम

पेटदर्द समाप्त होता है।

२६ अक्टूबर
२००२

उदर-चिकित्सा (२)

१. मंत्र

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति।
नाम्भोधरोदर - निरुद्धमहाप्रभावः
सूर्यातिशायिमहिमासि मुनीन्द्र! लोके॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. प्रयोग विधि

उदर-पीड़ा के समय मंत्र से पानी को अभिमंत्रित करें।

४. परिणाम

उदर-रोग समाप्त होता है। शारीरिक पीड़ा को कम करता है।

३० अक्टूबर
२००२

उदर-चिकित्सा (३)

१. समस्या

पेटदर्द।

२. मंत्र

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तेभ्यो नमः।

३. मंत्र संख्या

पेटदर्द के समय १०८ बार अथवा १००० बार जप करें।

४. प्रयोग विधि

मंत्र को पेट पर स्थापित करें।

५. परिणाम

पेट के रोग शांत होते हैं।

३१ अक्टूबर
२००२

उदर-चिकित्सा (४)

१. समस्या

पेटदर्द।

२. मंत्र

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः।

३. प्रयोग विधि

नाभि मंडल पर षोडशदल कमल की कल्पना करें। १६ स्वरों की स्थापना कर उनका जप करें।

४. परिणाम

पेट के रोग शांत होते हैं।

१ नवम्बर
२००२

पाण्डु (पीलिया) रोग-चिकित्सा

१. मंत्र

ॐ रां रीं रुं रों रः स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

२१ बार।

३. प्रयोग विधि

बीमारी के समय रोगी के इस मंत्र से झाड़ा दें।

४. परिणाम

पीलिया समाप्त हो जाता है।

२ नवम्बर
२००२

ॐ

व्रण-चिकित्सा

१. समस्या

शरीर के किसी भी स्थान पर व्रण होना।

२. मंत्र

ॐ णमो कुट्ठबुद्धीणं जिणाणं ह्रां ह्रीं।

३. मंत्र संख्या

१ माला।

४. परिणाम

व्रण का नाश होता है।

३ नवम्बर
२००२

चर्मरोग-चिकित्सा

१. समस्या

त्वचा का रोग।

२. मंत्र

क्षिप ॐ स्वाहा।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. प्रयोग विधि

शरीर पर हरे रंग का ध्यान करते हुए मंत्र का उच्चारण करें।

४. परिणाम

त्वचा के रोग नष्ट हो जाते हैं। मानसिक प्रसन्नता बढ़ती है।

४ नवम्बर
२००२

रोग-निवारण

१. मंत्र

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणी अमृतं श्रावय श्रावय मम सर्वरोगान् प्लावय प्लावय ठः ठः ठः स्वाहा।

२. प्रयोग विधि

२१ बार पानी को मंत्र से अभिमंत्रित कर रोगी को पिलाएं।

३. परिणाम

एकान्तर बुखार और संधिवात जैसे असह्य रोग समाप्त हो जाते हैं।

५ नवम्बर
२००२

ॐ

आधाशीशी-चिकित्सा (१)

१. मंत्र

ॐ क्षां क्षीं क्षः हः स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

२१ बार।

३. परिणाम

आधाशीशी की वेदना समाप्त होती है।

६ नवम्बर
२००२

आधाशीशी-चिकित्सा (२)

१. मंत्र

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ!
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय
तुभ्यं नमो जिन! भवोदधिशोषणाय॥

२. मंत्र संख्या

१ माला।

३. परिणाम

आधाशीशी की वेदना का निवारण होता है।

७ नवम्बर
२००२

पाचन-तन्त्र का संतुलन

१. समस्या

पाचन-तन्त्र की अस्वस्थता।

२. मंत्र

ॐ नमो भगवती गुणवती महामानसी स्वाहा।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. प्रयोग विधि

पाचन तन्त्र पर नीले रंग का ध्यान करते हुए मंत्र-जप करें।

५. परिणाम

पाचन-तन्त्र स्वस्थ रहता है।

८ नवम्बर
२००२

व्रणहर

१. मंत्र

ॐ णमो जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं नय पूई न सोणिणं एएणं सव्ववाएणं मा पच्चडउ मा दुक्कउ मा कुट्टउ ॐ ठः ठः स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

१ माला।

३. परिणाम

व्रण समाप्त होता है।

६ नवम्बर
२००२

मलेरिया ज्वर-नाशक

१. मंत्र

ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ॐ णमो उवज्झायाणं ॐ णमो आयरियाणं ॐ णमो सिद्धाणं ॐ णमो अरहंताणं।

२. मंत्र संख्या

१ माला।

३. प्रयोग विधि

सफेद वस्त्र के एक किनारे को हाथ में लेकर एक बार मंत्र पढ़कर उसके एक स्थान को मोड़ दें। क्रमशः १०८ बार मंत्रित कर वस्त्र को मोड़ दें। तदनन्तर रोगी को ओढ़ा दें।

४. परिणाम

मलेरिया बुखार नष्ट होता है।

१० नवम्बर
२००२

नजर उतारना

१. मंत्र

ॐ णमो भगवते श्रीपार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेन्द्रपद्मावतीसहिताय आत्मचक्षु प्रेतचक्षु पिशाचचक्षु सर्वग्रहनाशय त्रासय त्रासय ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय स्वाहा।

२. प्रयोग विधि

दीपावली के दिन १ माला फेरकर मंत्र सिद्ध करें। मंत्र का सात बार उच्चारण कर पानी पिलाएं।

३. परिणाम

नजर उतरती है।

११ नवम्बर
२००२

सर्वरोग-नाशक (१)

१. मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लौं ब्लौं अर्हं नमः।

२. मंत्र संख्या

त्रिसन्ध्या में एक-एक माला।

३. परिणाम

सभी रोगों का नाश होता है।

१२ नवम्बर
२००२

सर्वरोग-नाशक (२)

१. मंत्र

ॐ णमो पार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेन्द्राय सप्तकणविभूषिताय सर्वज्वरं सर्ववातं सर्वलूतं सर्वदुष्टं सर्वविषं सव्वस्स रोगस्स नाशय नाशय छिन्दय भिन्दय यः यः रः रः हुं फट् स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

सभी रोगों का नाश होता है।

१३ नवम्बर
२००२

सर्वव्याधि-चिकित्सा

१. समस्या

शारीरिक बीमारी।

२. मंत्र

ॐ णमो भगवते श्रीपार्श्वनाथाय सर्व दुरितं अपहर अपहर अजिते महाबले मम शरीरं रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन ७ बार।

४. प्रयोग विधि

प्रातःकाल उठते ही मंत्र पढ़कर शरीर पर फूंक मारें।

५. परिणाम

व्याधि समाप्त होती है।

१४ नवम्बर
२००२

ॐ

अनिद्रा-निवारण

१. समस्या

नींद नहीं आना।

२. मंत्र

हूँ हं।

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. प्रयोग विधि

सोते समय मस्तक पर नीले रंग का, शक्ति केन्द्र पर पीले रंग का और पेट पर नीले रंग का ५-५ मिनिट ध्यान करें। फिर विशुद्धि केन्द्र पर चित्त केन्द्रित कर मंत्र का उच्चारण करें।

५. परिणाम

अनिद्रा की समस्या समाहित हो जाती है।

१५ नवम्बर
२००२

अनिद्रा-निवारण : कार्य-सिद्धि

१. समस्या

अनिद्रा।

२. मंत्र

चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्टी महिड्ढिओ।
संती संतिकरे लोए पत्तो गइमणुत्तरं॥

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

४. प्रयोग विधि

प्रस्तुत मंत्र को १ श्वास में बोलना। एकासन, श्वेत वस्त्र, चावल तथा दूध का भोजन। ४१ दिन तक इस विधि से जप करें।

५. परिणाम

सुखद नींद तथा कार्य-सिद्धि होती है।

१६ नवम्बर
२००२

औषध-शक्ति का संवर्धन

१. मंत्र

ॐ णमो जिणाणं ॐ णमो अमीयसवीणं नमः झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

२१ बार।

३. परिणाम

औषधि की शक्ति बढ़ती है।

१७ नवम्बर
२००२

ॐ

दंश-प्रतिकार

१. मंत्र

क्लीं णमो लोए सव्वसाहूणं क्लीं णमो उवज्झायाणं क्लीं णमो आयरियाणं क्लीं णमो सिद्धाणं क्लीं णमो अरहंताणं।

२. प्रयोग विधि

बिच्छू के काटने पर जब तक पीड़ा का अनुभव हो, तब तक इस मंत्र का प्रयोग करें।

३. परिणाम

बिच्छू के दंश की पीड़ा का शमन होता है।

१८ नवम्बर
२००२

ॐ

विषनाशक (१)

१. समस्या

सर्प तथा बिच्छू का दंश।

२. मंत्र

ॐ णमो उवज्झायाणं

ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं

ॐ णमो आयरियाणं

ॐ णमो सिद्धाणं

ॐ णमो अरहंताणं।

३. मंत्र संख्या

५ मिनिट से जितना अपेक्षित हो।

४. परिणाम

विष-नाश।

१९ नवम्बर
२००२

विषनाशक (२)

१. समस्या

किसी भी जन्तु के विष का प्रभाव।

२. मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा क्लीं नमः।

३. प्रयोग विधि

शरीर में विष चढ़ते ही अस्खलित जप करें।

४. परिणाम

विष का प्रभाव नष्ट होता है।

२० नवम्बर
२००२

विषनाशक (३)

१. मंत्र

ॐ ह्रं ॐ ह्रीं अर्हं ऐं श्रीं अ सि आ उ सा नमः।

२. प्रयोग विधि

शरीर में विष फैलने पर मंत्र का २१ बार जप करें।

३. परिणाम

विष दूर होता है।

२१ नवम्बर
२००२

विषनाशक (४)

१. मंत्र

ॐ णमो भगवते पार्श्वतीर्थङ्कराय हंसः महाहंसः पद्महंसः शिवहंसः कोपहंसः उरगेशहंसः पक्षिः महाविषभक्षि हुं फट् ।

२. मंत्र संख्या

१ माला।

३. प्रयोग विधि

जब शरीर में जहर चढ़े, तब मंत्र का जप करें।

४. परिणाम

विष समाप्त होता है।

२२ नवम्बर
२००२

विषनाशक (५)

१. समस्या

विष चढ़ना।

२. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ह्रीं क्लीं अ सि आ उ सा चुलु चुलु कुलु कुलु हुलु हुलु मुलु मुलु (इच्छियं) मे कुरु कुरु स्वाहा।

३. मंत्र संख्या

२१ बार।

४. प्रयोग विधि

२१ बार मंत्र जप कर पानी को अभिमंत्रित कर रोगी को पिलाना।

५. परिणाम

मन-चिन्तित वस्तु मिलती है। चढ़ा हुआ विष उतरता है। रोग शांत होता है।

२३ नवम्बर
२००२

ॐ

सर्प-विष-निवारक (१)

१. मंत्र

रक्तेक्षणं समदकोकिल-कण्ठनीलं
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम्।
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंकस्
त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः॥

२. मंत्र संख्या

२१ बार।

३. प्रयोग विधि

जल को मंत्र से अभिमन्त्रित कर पीना।

४. परिणाम

सर्प का विष उतर जाता है।

२४ नवम्बर
२००२

ॐ

सर्प-विष-निवारक (२)

१. मंत्र

त्वत्संस्तवेन भवसन्तति-सन्निबद्धं
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम्।
आक्रान्त-लोकमलिनीलमशेषमाशु
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम्॥

२. मंत्र संख्या

१ माला।

३. प्रयोग विधि

जब सर्प का दंश लगे तब मंत्र का प्रयोग करें।

४. परिणाम

सर्प कीलित हो जाता है, सारे पाप, संकट, छोटे-मोटे उपद्रव दूर हो जाते हैं।

२५ नवम्बर
२००२

श्वानविष-निवारक (१)

१. समस्या

कुत्ते का विष शरीर पर चढ़ना।

२. मंत्र

नात्यद्भुतं भुवनभूषण! भूतनाथ
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति॥

३. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला

४. प्रयोग विधि

जब कुत्ता काटे तब मंत्र का जप करें।

५. परिणाम

कुत्ते का विष दूर होता है।

२६ नवम्बर
२००२

श्वानविष-निवारक (२)

१. मंत्र

ॐ ठः ठः स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

२१ बार।

३. प्रयोग विधि

कुत्ते के काटने पर रोगी के इस मंत्र का झाड़ा दें।

४. परिणाम

कुत्ते का जहर उतर जाता है।

२७ नवम्बर
२००२

वृश्चिकविष-निवारक

१. मंत्र

१. ॐ पक्षि स्वाहा।

२. ॐ द्रं जं श्रीं जं स्वाहा।

२. प्रयोग विधि

जब तक वृश्चिक दंश से पीड़ा हो तब तक मंत्र जपते रहें।

३. परिणाम

वृश्चिक का विष दूर होता है।

२८ नवम्बर
२००२

जंगम विष का शमन

१. मंत्र

ॐ णमो जिणाणं ॐ णमो आसीविषाणं ॐ णमो दिट्ठीविषाणं झौं झौं स्वाहा।

२. मंत्र संख्या

१ माला।

३. प्रयोग विधि

गोशीर्ष चन्दन के द्वारा मंत्र का यंत्र बनाकर मंत्र जप कर यंत्र का जल पिलाया जाता है।

४. परिणाम

स्थावर और जंगमहृदोनों प्रकार के जहर उतर जाते हैं।

२९ नवम्बर
२००२

दृष्टिज्वर का विलय

१. मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कलिकुण्डस्वामिनि! अतुल-बलवीर्यपराक्रमा (अमुकस्य) दाह ज्वर उपशांतिं कुरु कुरु आत्मविद्या रक्ष रक्ष परविद्यां छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द श्रीं ह्रीं हं फट् स्वाहा।

२. प्रयोग विधि

२१ बार मंत्र का उच्चारण कर झाड़ा दें।

३. परिणाम

दृष्टिज्वर समाप्त होता है।

३० नवम्बर
२००२

ॐ

दृष्टिदोष-निवारक (१)

१. मंत्र

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धि-बोधात्
त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रय-शंकरत्वात्।
धाताऽसि धीर! शिवमार्गविधेर्विधानात्
व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

दृष्टिदोष का निवारण होता है। इस मंत्र के प्रयोक्ता पर अग्नि का असर नहीं होता।

१ दिसम्बर
२००२

ॐ

दृष्टिदोष-निवारक (२)

१. मंत्र

बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चितपादपीठ!
स्तोतुं समुद्यत-मतिर् विगत-त्रपोऽहम्।
बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम्॥

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन १ माला।

३. परिणाम

सर्व सिद्धियां प्राप्त होती हैं। दृष्टिदोष दूर होता है।

२ दिसम्बर
२००२

दर्शन शक्ति

१. मंत्र

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं।

२. प्रयोग विधि

नेत्र पर मंत्र की स्थापना करें। आत्म-सौन्दर्य को नेत्रों का विषय बनाएं। एकाग्रता के साथ समयावधि को बढ़ाते जाएं।

३. परिणाम

दर्शन शक्ति का विकास।

३ दिसम्बर
२००२

सूक्ष्म स्पर्श का अनुभव

१. मंत्र

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं ।

२. प्रयोग विधि

स्पर्शनेन्द्रिय पर मंत्र की स्थापना करें। फिर मंत्र का साक्षात्कार करें।

३. परिणाम

भाव-स्पर्श का अनुभव करने से द्रव्य-स्पर्श की लालसा समाप्त होती है।

४ दिसम्बर
२००२

दिव्य सुरभि का अनुभव

१. मंत्र

ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं ।

२. प्रयोग विधि

नाक पर मंत्र की स्थापना करें। आचार्य की पवित्र देह से निकलने वाली गंध को नाक का विषय बनाएं। एकाग्रता के साथ समयावधि को बढ़ाते जाएं।

३. परिणाम

दिव्य सुरभि का अनुभव होता है।

५ दिसम्बर
२००२

ग्राम-प्रवेश (१)

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं गौतमस्वामिने नमः।

२. मंत्र संख्या

२१ बार।

३. प्रयोगविधि

ग्राम में प्रवेश करते समय मंत्र का जप करें।

४. परिणाम

इष्ट का लाभ होता है।

६ दिसम्बर
२००२

ग्राम-प्रवेश (२)

१. मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं ॐ णमो भगवइए चंदाई महाविज्जाए।

२. मंत्र संख्या

ग्राम-प्रवेश के समय ७ बार उच्चारण करें।

३. प्रयोग विधि

पौष कृष्णा नवमी को एकासन, दशमी को उपवास और एकादशमी को एकासन करें। दशमी के दिन १००० जप करने से मंत्र सिद्ध होता है।

४. परिणाम

अन्न-पानी का लाभ मिलता है।

७ दिसम्बर
२००२

मंत्र-साक्षात्कार का प्रयोग (१)

१. समस्या

मानसिक चंचलता।

२. मंत्र

णमो अरहंताणं ।

३. प्रयोग विधि

रात्रि का चौथा प्रहर। साधक पर्वत के शिखर पर स्थित है। अनन्त नीले आकाश में बहुत लम्बा-चौड़ा श्वेतवर्ण वाला 'ण' उभर रहा है। क्रमशः मो अरहंताणंह्नअक्षर श्वेत वर्ण में इसी प्रमाण में एक-एक कर उभर रहे हैं।

४. परिणाम

एकाग्रता और मंत्र-वर्ण का साक्षात्कार।

८ दिसम्बर
२००२

मंत्र-साक्षात्कार का प्रयोग (२)

१. समस्या

मानसिक चंचलता।

२. मंत्र

णमो सिद्धाणं ।

३. प्रयोग विधि

अरुणोदय हो गया है। बहुत लम्बा-चौड़ा वर्णवाला 'ण' उभर रहा है। क्रमशः 'मो सिद्धाणं' अक्षर अरुण वर्ण में इसी प्रमाण में एक-एक कर उभर रहे हैं।

४. परिणाम

एकाग्रता और मंत्र-वर्ण का साक्षात्कार।

६ दिसम्बर
२००२

मंत्र-साक्षात्कार का प्रयोग (३)

१. समस्या

मानसिक चंचलता ।

२. मंत्र

णमो आयरियाणं।

३. प्रयोग विधि

सूर्योदय हो चुका है। सूर्य आकाश के मध्य स्थित है। मध्याह्न की वेला है। बहुत लम्बा-चौड़ा पीत वर्ण वाला 'ण' उभर रहा है। क्रमशः 'मो आयरियाणं' अक्षर पीत वर्ण में एक-एक कर उभर रहे हैं। प्रत्येक अक्षर का प्रत्यक्षीकरण हो रहा है।

४. परिणाम

एकाग्रता और मंत्र-वर्ण का साक्षात्कार।

१० दिसम्बर
२००२

मंत्र-साक्षात्कार का प्रयोग (४)

१. समस्या

मानसिक चंचलता ।

२. मंत्र

णमो उवज्झायाणं।

३. प्रयोग विधि

सायंकाल का समय आ गया है। अंधकार प्रसृत हो रहा है। बहुत लम्बा-चौड़ा नील वर्ण वाला 'ण' उभर रहा है। क्रमशः 'मो उवज्झायाणं' अक्षर नील वर्ण में एक-एक कर उभर रहे हैं। प्रत्येक अक्षर का प्रत्यक्षीकरण हो रहा है।

४. परिणाम

एकाग्रता और मंत्र-वर्ण का साक्षात्कार ।

११ दिसम्बर
२००२

मंत्र-साक्षात्कार का प्रयोग (५)

१. समस्या

मानसिक चंचलता ।

२. मंत्र

णमो लोए सव्वसाहूणं।

३. प्रयोग विधि

रात्रि बीत रही है। मध्यरात्रि का समय। बहुत लम्बा-चौड़ा श्याम वर्ण वाला 'ण' उभर रहा है। क्रमशः 'मो लोए सव्वसाहूणं' अक्षर श्याम वर्ण में एक-एक कर उभर रहे हैं। प्रत्येक अक्षर का प्रत्यक्षीकरण हो रहा है।

४. परिणाम

एकाग्रता और मंत्र-वर्ण का साक्षात्कार ।

१२ दिसम्बर
२००२

मंत्र-सिद्धि का लक्षण (१)

१. मंत्र

णमो अरहंताणं।

२. प्रयोग विधि

रंगयुक्त अक्षर का चिन्तन करें। वह कम से कम दो-तीन फुट बड़ा हो। मन को एकाग्र करें। मन की आंख से देखें। मन शांत और स्वस्थ होगा तो अक्षर की आकृति स्पष्ट दिखने लगेगी, अन्यथा अक्षर का रंग और आकृति बदल जाएगी।

प्रत्येक अक्षर पर २०-३० सैकेण्ड रुकें, फिर समय बढ़ाते जाएं। निरन्तर अभ्यास करने से प्रत्येक अक्षर की सुन्दर आकृति प्रत्यक्ष होने लगेगी। मन वहां स्थिर होगा। फिर धीरे-धीरे अक्षर में से किरणें फूटने लगेगी और सारे अक्षर ज्योतिर्मय बन जाएंगे।

३. परिणाम

मंत्र-सिद्धि का अनुभव ।

१३ दिसम्बर
२००२

मंत्र सिद्धि का लक्षण (२)

१. मंत्र

णमो अरहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ।

२. प्रयोग विधि

रंगयुक्त अक्षर का चिन्तन करें। वह कम से कम दो-तीन फुट बड़ा हो। मन को एकाग्र करें। मन की आंख से देखें। मन शांत और स्वस्थ होगा तो अक्षर की आकृति स्पष्ट दिखने लगेगी, अन्यथा अक्षर का रंग और आकृति बदल जाएगी।

प्रत्येक अक्षर पर २०-३० सैकेण्ड रुकें, फिर बढ़ाते जाएं। निरन्तर अभ्यास करने से प्रत्येक अक्षर की सुन्दर आकृति प्रत्यक्ष होने लगेगी। मन वहां स्थिर होगा। फिर धीरे-धीरे अक्षर में से किरणें फूटने लगेगी और सारे अक्षर ज्योतिर्मय बन जाएंगे।

३. परिणाम

मंत्र-सिद्धि का अनुभव।

१४ दिसम्बर
२००२

एकम (प्रतिपदा)

१. मंत्र

ॐ।

२. मंत्र संख्या

१ माला ।

३. प्रयोग विधि

एकम के दिन मंत्र का जप करें।

४. परिणाम

पवित्र वातावरण का निर्माण होता है, मानसिक प्रसन्नता बढ़ती है।

१५ दिसम्बर
२००२

द्वितीया

१. मंत्र

ॐ ह्रीं।

२. मंत्र संख्या

१ माला ।

३. प्रयोग विधि

द्वितीया के दिन जप का प्रयोग करें।

४. परिणाम

पवित्र वातावरण का निर्माण होता है ।

१६ दिसम्बर
२००२

तृतीया

१. मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं।

२. मंत्र संख्या

१ माला ।

३. प्रयोग विधि

तृतीया के दिन मंत्र का प्रयोग करें।

४. परिणाम

पवित्र वातावरण का निर्माण होता है।

१७ दिसम्बर
२००२

ॐ

चतुर्थी

१. मंत्र

ॐ ह्रां अर्हं।

२. मंत्र संख्या

१ माला ।

३. प्रयोग विधि

चतुर्थी के दिन जप का प्रयोग करें।

४. परिणाम

पवित्र वातावरण का निर्माण होता है।

१८ दिसम्बर
२००२

ॐ

पंचमी

१. मंत्र

णमो सिद्धाणं।

२. मंत्र संख्या

१ माला ।

३. प्रयोग विधि

पंचमी के दिन जप का प्रयोग करें।

४. परिणाम

पवित्र वातावरण का निर्माण होता है।

१६ दिसम्बर
२००२

ॐ

षष्ठी

१. मंत्र

ॐ सिद्धेभ्यो नमः।

२. मंत्र संख्या

१ माला ।

३. प्रयोग विधि

षष्ठी के दिन जप का प्रयोग करें।

४. परिणाम

पवित्र वातावरण का निर्माण होता है।

२० दिसम्बर
२००२

ॐ

सप्तमी

१. मंत्र

णमो अरहंताणं।

२. मंत्र संख्या

१ माला ।

३. प्रयोग विधि

सप्तमी के दिन मंत्र का प्रयोग करें।

४. परिणाम

पवित्र वातावरण का निर्माण होता है।

२१ दिसम्बर
२००२

अष्टमी

१. मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं।

२. मंत्र संख्या

१ माला ।

३. प्रयोग विधि

अष्टमी के दिन मंत्र का प्रयोग करें।

४. परिणाम

पवित्र वातावरण का निर्माण होता है।

२२ दिसम्बर
२००२

ॐ

नवमी

१. मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं नमो जिणाणं।

२. मंत्र संख्या

१ माला ।

३. प्रयोग विधि

नवमी के दिन जप का प्रयोग करें।

४. परिणाम

पवित्र वातावरण का निर्माण होता है।

२३ दिसम्बर
२००२

दशमी

१. मंत्र

ॐ ह्रां श्रीं अर्हं णमो जिणाणं।

२. मंत्र संख्या

१ माला ।

३. प्रयोग विधि

दशमी के दिन जप का प्रयोग करें।

४. परिणाम

पवित्र वातावरण का निर्माण होता है।

२४ दिसम्बर
२००२

एकादशी

१. मंत्र

ॐ ॐ ह्रीं हंसः श्रीं हंसः ॐ ॐ।

२. मंत्र संख्या

१ माला ।

३. प्रयोग विधि

एकादशी के दिन जप का प्रयोग करें।

४. परिणाम

पवित्र वातावरण का निर्माण होता है।

२५ दिसम्बर
२००२

द्वादशी

१. मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः।

२. मंत्र संख्या

१ माला ।

३. प्रयोग विधि

द्वादशी के दिन मंत्र का प्रयोग करें।

४. परिणाम

पवित्र वातावरण का निर्माण होता है।

२६ दिसम्बर
२००२

त्रयोदशी

१. मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं नमः।

२. मंत्र संख्या

१ माला।

३. प्रयोग विधि

त्रयोदशी के दिन मंत्र का प्रयोग करें।

४. परिणाम

पवित्र वातावरण का निर्माण होता है।

२७ दिसम्बर
२००२

ॐ

चतुर्दशी

१. मंत्र

श्रीमद्वृषभादिवर्धमानान्तेभ्यो नमः।

२. मंत्र संख्या

१ माला।

३. प्रयोग विधि

चतुर्दशी के दिन मंत्र का प्रयोग करें।

४. परिणाम

पवित्र वातावरण का निर्माण होता है।

२८ दिसम्बर
२००२

पूर्णिमा

१. मंत्र

ॐ ह्रीं नभमण्डलवते भाले चन्द्ररेखा नमः।

२. मंत्र संख्या

१ माला ।

३. प्रयोग विधि

पूर्णिमा के दिन जप का प्रयोग करें।

४. परिणाम

पवित्र वातावरण का निर्माण होता है।

२९ दिसम्बर
२००२

अमावस्या

१. मंत्र

ॐ जोग्गे मग्गे तच्चे भूदे भव्वे भविस्से अक्खे पक्खे जिण पारिस्से स्वाहा ॐ ह्रीं स्वर्हं नमो नमोऽर्हंताणं ह्रीं नमः।

२. मंत्र संख्या

१ माला।

३. प्रयोग विधि

अमावस्या के दिन जप का प्रयोग करें।

४. परिणाम

पवित्र वातावरण का निर्माण होता है, दिन बाधामुक्त व्यतीत होता है।

३० दिसम्बर
२००२

ॐ

मंगल करण

१. मंत्र

विघन हरण मंगल करण, स्वाम भिक्षु रो नाम।
गुण ओलख सुमिरण करै, सरै अचिन्त्या काम।।

२. मंत्र संख्या

प्रतिदिन २१ बार अथवा १ माला।

३. प्रयोग विधि

भाद्रपद शुक्ला त्रयोदशी से प्रारम्भ करें।

४. परिणाम

विघ्न-निवारण।

३१ दिसम्बर
२००२

ॐ

परिशिष्ट-१

उवसग्गहर स्तोत्र

१. उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं।
विसहर-विसनिन्नासं, मंगल-कल्लाण आवासं॥

२. विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ।
तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठ जरा जंती उवसामं॥

३. चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होई।
नर तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोहग्गं॥

४. तुह सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणि-कप्पपायवब्भहिए।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं॥

५. इय संथुओ महायस! भत्तिब्भरनिब्भरेण हियएण।
ता देव! दिज्ज बोहिं भवे-भवे पास जिणचन्द!॥

वज्रपंजर स्तोत्र

१. परमेष्ठि नमस्कारं सारं नवपदात्मकम्।
आत्मरक्षाकरं वज्रपंजराभं स्मराम्यहम्॥

२. ॐ णमो अरहंताणं शिरस्कं शिरसि स्थितम्।
ॐ णमो सव्वसिद्धाणं, मुखे मुखपटं वरम्॥

३. ॐ णमो आयरियाणं अंगरक्षातिशायिनी।
ॐ णमो उवज्झायाणं आयुधं हस्तयोर्दृढम्॥

४. ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं मोचके पादयोः शुभे।
एसो पंच णमुक्कारो शिलावज्रमयीतले॥

५. सव्वपावप्पणासणो वप्रो वज्रमयो बहिः।
मंगलाणं च सव्वेसिं खादिराङ्गारखातिका॥

६. स्वाहान्तं च पदं ज्ञेयं पढमं हवइ मंगलं।
वप्रोपरि वज्रमयं पिधानं देहरक्षणे॥

७. महाप्रभावा रक्षेयं क्षुद्रोपद्रवनाशिनी।
परमेष्ठिपदोद्भूता कथिताः पूर्वसूरिभिः॥

८. यश्चैवं कुरुते रक्षां परमेष्ठिपदैः सदा।
तस्य न स्याद् भयं व्याधिराधिश्चापि कदाचन॥

ॐ

नवग्रह निवारण पार्श्व स्तोत्र

१. दोसावहारदक्खो, नालीयायार वियासगोपसरो।
रयणत्तयस्स जणओ पासजिणो जयउ जयचक्खु॥

२. कय कुवलय पडिबोहो हरिणंकिय विग्गहो कला निलओ।
विहिआरविंद महणो दिअराओ जयइ पास जिणो॥

३. कंतीइ णिज्जिणिंतो सिंदूरं पुहइनंदणो कूरो।
जयजंतु अमयवक्को सुमंगलो जयइ पास जिणो॥

४. उप्पलदल नीलरुई हरिमंडल संथुओ इलाणंदो।
रयणिअरदारओ मह बुहो पसीइज्ज पास पहू॥

५. नाहिअवाय विअड्ढो नायत्थो नायरायकयपूओ।
सिरिपासनाह देवो देवायरिओ सिवं दिसउ॥

६. रायावट्टसमुज्जल तणुप्पहा मंडलो महाभूई।
असुरेहिं नमिज्जंतो पास जिणिंदो कई जयउ॥

७. तिमिरासी समारूढो संतो दुक्खावहो जयम्मि थिरो।
बहुल तमासरिससिरी,जय चक्खु सुओ जयइ पासो॥

८. कवलीकय दोसायर मायंड रहं अहो तणु विमुक्कं।
लोआभरणी भूअं पास जिणं सत्तमं सरह॥

९. दुरिआइं पासनाहो सिहावमालिअनहो भुवणकेऊ।
दूरे तमरासीओ सत्तमट्ठाणट्ठिओ हरउ॥

१०. इअ नवगहथुइगब्भं जिणपहसूरिहिं गुंफिअं थवणं।
तुह पास! पढइ जो तं असुहा वि गहा न पीडंति॥

ॐ

श्री मंत्राधिराज स्तोत्र

सर्वातिशय सम्पूर्णान् ध्यात्वा सर्वजिनाधिपान्।
पंच वर्णान् पंच रूपान् विषयद्रुमकुञ्जरान्॥१॥

चतुर्गात्रांश्चतुर्वक्त्रान् चतुर्विंशतिसञ्जितान्।
जैनीं सर्वाङ्गेषु रक्षां कुर्वे दुःखौघ नाशिनीम्॥२॥

शिरो मे वृषभः पातु भालं श्रीअजितः प्रभुः।
पातां मे श्रीजिनौ नेत्रे सम्भवश्चाभिनन्दनः॥३॥

सुमतिः सुसीम जन्मा च श्रवणौ मम रक्षताम्।
सुपार्श्वो रक्षतु घ्राणं मुखं चन्द्रप्रभः प्रभुः॥४॥

रसनां सुविधिः पातु कण्ठं श्रीशीतलो जिनः।
स्कन्धं श्रेयांसः श्रीवासुपूज्यश्च विमलो भुजौ॥५॥

अनन्तश्रीधर्मनाथौ पातां मे करपल्लवौ।
शान्तिर्मे हृदयं रक्षेन्मध्यं नाभिं च कुंथ्वरौ॥६॥

मल्लिः कटीं सक्थिनी च रक्षतान्मुनिसुव्रतः।
नमिर्जानुद्वयं पायान्नेमिर्जङ्घाद्वयं पुनः॥७॥

श्रीपार्श्वो वर्धमानश्च रक्षतान्मे पदद्वयम्।
चतुर्विंशतिरूपोऽव्यादर्हन्मे सकलं वपुः॥८॥

एतां जिन बलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत्।
स चिरायुः सुखी पुत्री निर्व्याधिर्विजयी भवेत्॥९॥

चैत्यपुरुष जग जाए

चैत्यपुरुष जग जाए।
देव! तुम्हारा पुण्य नाम, मेरे मन में रम जाए॥

१. ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ उद्‌गाता,
अर्हं अर्हं अर्हं अर्हं अर्हं अर्हं त्राता।
ॐ ह्रीं श्रीं जय, ॐ ह्रीं श्रीं जय विजय ध्वजा लहराए॥

२. ॐ जय भिक्षु, भिक्षु जय ॐ ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं,
विघ्न शमन ॐ, व्याधि शमन ॐ,
क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं।
नाम मंत्र तव व्रणसंरोहण सतत अमृत बरसाए॥

३. मिटे विषमता मन की तन की, अनुभव की, चिंतन की,
पल-पल पग-पग मिले सफलता तन्मयता चेतन की।
नाम मंत्र तव भयहर विषहर साम्य सिंधु गहराए॥

४. 'आत्मा भिन्न शरीर भिन्न है', तुमने मंत्र पढ़ाया,
आत्मा अचल अरुज शिव शाश्वत, नश्वर है यह काया।
आत्मा आत्मा के द्वारा ही, आत्मा में लय पाए॥

५. तुम निरुपद्रव हम निरुपद्रव, तुम हम सब हैं आत्मा,
तव जागृत आत्मा से हम सब बन जाएं परमात्मा।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रं ह्रः, अन्तर्मल धुल जाए॥

लय : संयममय जीवन हो......

भिक्षु-स्मृति

भिक्षु म्हारै प्रगट्या जी भरत खेतर में।
ज्यांरो ध्यान घरूं अंतर में॥

१. देश-देश नां लोक आपनों, समरण कर रह्या उर में॥

२. आप तणी बुध नीं परशंसा, बहु लोक करै पुर-पुर में॥

३. मंत्राक्षर-सम नाम तुम्हारो, विघ्न मिटै घर-घर में॥

४. जबर उद्योत कियो जशधारी, एह पंचमें अर में॥

५. आप तणां गण में स्थिर पद सूं, वसियै वास अमर में॥

६. आप तणां गण थी 'उपराठा' उभय भवे दुख भर में॥

७. सांप्रत काले स्वाम गण पायो, आयो चिंतामणि कर में॥

८. आप आचारज महा उपगारी, कल्पवृक्ष जिम 'तर' में॥

९. दृढ़ मर्याद बांधी आप वारु, सतियां ने मुनिवर में॥

१०. उगणीसै गुणतीस बैसाखै, पद छठ बीदासर में॥

११. भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे,
'जयजश' सुख मंदर में॥

ॐ

विघ्न हरण

अ. भी. रा. शि. को. उदारी हो, धर्ममूर्ति धुन धारी हो,
विघ्नहरण वृद्धिकारी हो, सुख संपत्ति दातारी हो।
भजो मुनि गुणां रा भंडारी हो॥

१. भिक्षु भारीमाल ऋषिरायजी, खेतसीजी सुखकारी हो,
हेम हजारी आदि दे, सकल संत सुविचारी हो।
प्रणमूं हर्ष अपारी हो॥

२. दीपगणी दीपक जिसा जयजश करण उदारी हो,
धर्म प्रभावक महाधुनी, ज्ञान गुणां रा भण्डारी हो।
नित प्रणमै नर-नारी हो॥

३. सखर सुधारस सारसी, वाणी सरस विशाली हो,
शीतल चन्द सुहावणो, निमल विमल गुण न्हाली हो।
अमीचंद अघ टाली हो॥

४. उष्ण शीत वर्षा ऋतु समै, वर करणी विस्तारी हो,
तप जप कर तन तावियो, ध्यान अभिग्रह धारी हो।
सुणतां इचरजकारी हो॥

५. संत धनो आगे सुण्यो, ए प्रगट्यो इण आरी हो,
प्रत्यक्ष उद्योत कियो भलो, जाणै जिन जयकारी हो।
ज्यांरी हूं बलिहारी हो॥

६. धोरी जिन-शासन धुरा, अहोनिशि में अधिकारी हो,
परम दृष्टि में परखियो, जबर विचारण थांरी हो।
सुजश दिशा अनुसारी हो, प्रगट्यो ऋषि तूं भारी हो॥

लय : सो ही तेरापंथ पावै

ॐ

७. वृद्ध सहोदर जीत नों, जस धारी जयकारी हो,
लघु सहोदर सरुप नों, भीम गुणां रो भंडारी हो।
सखर सुजस संसारी हो॥

८. समरण थी सुख संपजै, जाप जप्यां जस भारी हो,
मन वांछित मनोरथ फलै, भजन करो नर-नारी हो।
वारूं बुद्धि विस्तारी हो॥

९. रामसुख रलियामणो, तेसठ उदक आगारी हो,
अड़सठ पैंतालिस भला, बलि उगणीस चौविहारी हो।
बड़ तपसी तपधारी हो॥

१०. मन दृढ़ वच दृढ़ महामुनि, शील दृढ़ सुविचारी हो,
परम विनीत पिछाणियो, श्रद्धा दृढ़ सुधारी हो,
समरणं सुखदातारी हो॥

११. शिव वासी लावा तणो, तप गुण राशी उदारी हो,
आश्वासी निज आतमा, षटमासी लग धारी हो।
शीतकाल मझारी हो, सह्यो शीत अपारी हो॥

१२. उष्ण शिला तथा रेत नीं, आतापन अधिकारी हो,
तप वर्णन चौमासा तणो, सुणतां इचरजकारी हो।
गुण निप्पन नाम भारी हो॥

१३. कोदर तप करड़ो कियो, षटमासी लग धारी हो,
ब्यावचियो मुनि बाल हो, छठ छठ अठम उदारी हो।
जावजीव जयकारी हो॥

१४. शीत-उष्ण बहु तप कियो, सुगुरु थकी इकतारी हो,
परम प्रीत पाली मुनि, जाझी कीरत ज्यांरी हो।
समरण सुख दातारी हो॥

ॐ

१५. विघ्न मिटै अरियण हटै, प्रगटै सुख भारी हो,
'दल रूप दोहग' दारिद्र दटै, नाम रटै नर-नारी हो।
एहवो भजन उदारी हो॥

१६. कर्म निर्जरा कारणै, जाप जपो नर-नारी हो,
निरवद्य कारज निरमलो, शिव सुख नो सहचारी हो।
सावद्य आणा वारी हो॥

१७. भीम अमीचन्द मुनि भला, कोदर शिव वृद्धिकारी हो,
राम सुख रलियामणो समण पंच सिरदारी हो।
जाप परम जस धारी हो॥

१८. शिव मंगल सुख साहिबी, संपत सरस सुधारी हो,।
अधिक आनन्द सुजस भलो, होवै हरष अपारी हो।
एहवो भजन उदारी हो॥

१९. उदधि अग्नि अरि विष तणो, सकल विघ्न परिहारी हो,
सत्य-शील प्रभावे जिन कह्यो, दशमा अंग मझारी हो।
तिमज भजन तंत सारी हो, परम मंत्र सम धारी हो॥

२०. तस्कर तास न पराभवै, चर्चा में जयकारी हो,
भूत रोग आपद हरै, अघ दल रूप परिहारी हो।
समरण महा सुखकारी हो॥

२१. चन्दपन्नती सूत्र नीं, गाथा द्वितीय विचारी हो,
तिमज भजन ए ऋषि तणो, अधिष्ठायक अधिकारी हो।
थिर दृढ़ आसता थांरी हो॥

२२. दवदन्ती सुरी दीपती, जयवंती जसधारी हो,।
इन्द्राणी सुरी आदि दे, स्हाज करण सुखकारी हो।
पुण्यवंती प्यारी हो॥

२३. गुणठाणे चोथे गुणी, समण-सत्यां हितकारी हो,
अ. सि. आ. उ. सा. नैं सदा, प्रणमै बारम्बारी हो।
तास विचारणा भारी हो॥

ॐ

२४. सिणगारांजी मोटी सती, हरखूजी हितकारी हो,
माता तास सुहामणी, अणसण चरण उदारी हो।
आराध्यो हितकारी हो॥

२५. हिम्मतवान सती हंती, व्यावच करण विचारी हो,
विघ्न हरण बच्छलकरी, दिल संपति दातारी हो।
जयजश हरश अपारी हो॥

२६. श्री जिन-शासन शोभतो, अधिष्ठायक अधिकारी हो,
अहोनिशि अवधि प्रजूंझती, वंछित पूरण हारी हो।
सुख संपति सहचारी हो॥

२७. जाण तिके नर जाणता, अवर न जाणे लिगारी हो,
धर्म उद्योत करण धुरा, निरवद्य कारज सारी हो।
आणा तास मझारी हो॥

२८. परम प्रीत सद्गुरु थकी, विडद वहै इकधारी हो,
पूरण आशा आसता, म्हारा मन मझारी हो।
जबर दिशा जयकारी हो॥

२९. अधिक विनय गुण आगलो, थिर दृढ़ आसता धारी हो,
तसु मिटवा जोग उपद्रव मिटै, ते अघ दल रूप परिहारी हो।
निश्चय री बात न्यारी हो, न टलै होणहारी हो।
जिम जिन अतिशय उदारी हो॥

३०. उगणीसै तेरे समै, वस्त पंचमी सोमवारी हो,
पंच ऋषि नो परवड़ो, स्तवन रच्यो तंत सारी हो।
प्रसिद्ध शहर सिरियारी हो, गणपति 'जयजश' कारी हो॥

३१. विघ्न हरण नीं स्थापना, भिक्षु नगर मझारी हो,
महासुदि चवदश पुष दिने, कीधी हरष अपारी हो,
तास सीख बच धारी हो, तीरथ च्यार मझारी हो।
ठाणां एकाणूं तिवारी हो॥

मुणिन्द मोरा

१. मुणिन्द मोरा, भिक्षु नैं भारीमाल,
वीर गोयम-सी जोड़ी रे, स्वामी मोरा।
अति भली रे, मोरा स्वाम॥
मुणिन्द मोरा, चोथा आरा नीं चाल,
विविध मर्यादा बांधी रे, स्वामी मोरा॥
निरमली रे, मोरा स्वाम॥

२. मुणिन्द मोरा, आप मांहि तथा गण में जाण,
सुध संजम जाणो तो रे, मोरा स्वाम।
रहिवो सही रे, मोरा स्वाम॥
मुणिन्द मोरा, ठागा सूं रहिवा रा पचखाण,
बलि अनन्त सिद्धां री साखे रे, स्वामी मोरा।
सम रही रे, मोरा स्वाम॥

३. मुणिन्द मोरा, अवगुण बोलण रा त्याग,
गण में अथवा बाहिर रे, स्वामी मोरा।
बिहुं तणै रे, मोरा स्वाम॥
मुणिन्द मोरा, मुनिवर जे महोभाग,
ए मर्याद आराधै रे, स्वामी मोरा।
हित घणै रे, मोरा स्वाम॥

लय : साहिब मोरा ए

ॐ

४. मुणिन्द मोरा, तीजे पट ऋषिराय,
खेतसीजी सुखकारी रे, स्वामी मोरा।
मुनि-पिता रे, मोरा स्वाम॥
मुणिन्द मोरा, सम दम उदधि सुहाय,
हेम हजारी भारी रे, स्वामी मोरा।
गुण रता रे, मोरा स्वाम॥

५. मुणिन्द मोरा, जयजश करण जिहाज,
दीप गणी दीपक-सा रे, स्वामी मोरा।
महामुनी रे, मोरा स्वाम॥
मुणिन्द मोरा, गणपति में सिरताज,
विदेह क्षेत्र प्रगटिया रे, स्वामी मोरा।
महाधुनी रे मोरा स्वाम॥

६. मुणिन्द मोरा, अमियचन्द अणगार,
महातपसी वैरागी रे, स्वामी मोरा।
गणनिलो रे, मोरा स्वाम॥
मुणिन्द मोरा, जीत सहोदर सार,
भीम जबर जयकारी रे, स्वामी मोरा।
अति भलो रे, मोरा स्वाम॥

७. मुणिन्द मोरा, कोदर तपसी करूर,
रामसुख ऋषि रूड़ो रे, स्वामी मोरा।
राजतो रे, स्वाम मोरा॥

ॐ

मुणिन्द मोरा, शिव-दायक शिव-सूर,
सतीदास सुखकारी रे, स्वामी मोरा।
गाजतो रे, मोरा स्वाम॥

८. मुणिन्द मोरा, उभय पिथल वर्धमान,
साम राम युग बन्धव रे, स्वामी मोरा,
नेम सूं रे, मोरा स्वाम॥
मुणिन्द मोरा, हीर बखत-गुण-खान,
थिरपाल फतैचंद जपियै रे, स्वामी मोरा।
प्रेम सूं रे, मोरा स्वाम॥

९. मुणिन्द मोरा, टोकर ने हरनाथ,
अखैराम सुखरामज रे, स्वामी मोरा।
ईश्वरू रे, मोरा स्वाम।
मुणिन्द मोरा, राम सम्भू शिव साथ,
जवान मोती जाचा रे, स्वामी मोरा।
दमीश्वरू रे, मोरा स्वाम॥

१०. मुणिन्द मोरा, इत्यादिक बहु सन्त,
बलि समणी सुखकारी रे, स्वामी मोरा।
दीपती रे, मोरा स्वाम॥
मुणिन्द मोरा, कल्लू महा गुणवन्त,
तीन बन्धव नीं माता रे, स्वामी मोरा।
जीपती रे, मोरा स्वाम॥

ॐ

११. मुणिन्द मोरा, गंगा नैं सिणगार,
जेतां दोलां जाणी रे, स्वामी मोरा।
महासती रे, मोरा स्वाम॥
मुणिन्द मोरा, जोतां महा जश धार,
चम्पा आदि सयाणी रे, स्वामी मोरा।
शोभती रे, मोरा स्वाम॥

१२. मुणिन्द मोरा, शासण महा सुखकार,
अमर सुरी अधिष्ठायक रे, स्वामी मोरा।
दायका रे, मोरा स्वाम॥
मुणिन्द मोरा, दवदन्ती जयवन्ती सार,
अनुकूल बलि इन्द्राणी रे, स्वामी मोरा।
सहायका रे, मोरा स्वाम॥

१३. मुणिन्द मोरा, उगणीसै चवदै उदार,
कार्तिक सुदि तिथि दशमी रे स्वामी मोरा।
गाइयो रे, मोरा स्वाम॥
मुणिन्द मोरा, 'जय-जश' सम्पति सार,
बीदासर सुखसाता रे, स्वामी मोरा।
पाइयो रे, मोरा स्वाम॥

चैतन्य केन्द्र
स्थान और नाम

ॐ

परिशिष्ट-२

१ जनवरी	गवारड़ी (मेड़ता)
२-३ जनवरी	मेड़ता
४ जनवरी	कलरू
५ जनवरी	लाम्बा
६ जनवरी	गोटन
७ जनवरी	रजलानी
८ जनवरी	नाडसर
९-१० जनवरी	भोपालगढ़
११ जनवरी	अररिया
१२ जनवरी	सेवकी
१३ जनवरी	जाजीवास
१४ जनवरी	बनाड़
१५ जनवरी	पावटा (जोधपुर)
१६-२३ जनवरी	सरदारपुरा (जोधपुर)
२४ जनवरी	अमरनगर
२५ जनवरी	नाहर ग्रेन्ड फेक्टरी
२६ जनवरी	भांडुकला
२७ जनवरी	लूणावास
२८ जनवरी	धवा
२९ जनवरी	अराबा
३० जनवरी	कल्याणपुरा
३१ जनवरी	सुरपुरा
१-३ फरवरी	समदड़ी

ॐ

४ फरवरी	जेठन्तरी
५ फरवरी	पारलू
६-७ फरवरी	कानाना
८ फरवरी	जानीयाना
९ फरवरी	राजगुरु कालोनी
१०-२४ फरवरी	पचपदरा
२५ फरवरी	बालोतरा
२६-२७ फरवरी	जसोल
२८ फरवरी	नाकोड़ा
१-६ मार्च	जसोल
७-८ मार्च	आसोतरा
९ मार्च	ब्रह्मधाम
१०-१४ मार्च	असाढा
१५-१९ मार्च	टापरा
२० मार्च	सिंवाणची मालाणी तेरापंथ भवन
२१ मार्च से २ अप्रैल	बालोतरा
३ अप्रैल	खेड़
४ अप्रैल	वागुण्डी
५ अप्रैल	दूधवा मल्लिनाथ
६ अप्रैल	माधासर
७-१० अप्रैल	बायतू
११ अप्रैल	भगाड़ियों की ढ़ाणी
१२ अप्रैल	कवास
१३ अप्रैल	उत्तरलाई

ॐ

१४-१७ अप्रैल	बाड़मेर
१८ अप्रैल	खेतसिंह की प्याऊ
१९ अप्रैल	सनावडा
२० अप्रैल	बूठ
२१ अप्रैल	मेहसू
२२ अप्रैल	थाण्ड
२३ अप्रैल	मोखावा
२४-२५ अप्रैल	गुड़ामालानी
२६ अप्रैल	पीपराली
२७ अप्रैल	बेरी गांव
२८ अप्रैल	राणोदर
२९ अप्रैल	सिंवाड़ा
३० अप्रैल	डेडवा
१ मई	सांचौर
२ मई	खोड़ा (गुजरात)
३ मई	पीलुड़ा
४ मई	दूधवा
५ मई	थराद
६-१६ मई	बाव
१७ मई	माड़का
१८ मई	बासरड़ा
१९ मई	रड़का
२० मई	नसेड़ी
२१ मई	भाभर

ॐ

२२ मई	सामला
२३ मई	रीया
२४ मई	खिमाणा
२५ मई	भीलड़ी
२६ मई	बाघपुरा
२७ मई	वर्धमान विहार धाम
२८-३० मई	डीसा
३१ मई	शाह फार्म
१ जून	ड्यूब प्लास्टिक फैक्ट्री
२-४ जून	पालनपुर
५ जून	काणोदर
६ जून	तेतीवाड़ा
७ जून	सिद्धपुर
८ जून	नेदरा
९ जून	कमलीवाड़ा
१०-१२ जून	पाटण
१३ जून	बालीसाना
१४ जून	ऊंझा
१५ जून	ताम
१६ जून	विसनगर
१७ जून	गोडवा
१८ जून	पामोल
१९-२० जून	बीजापुर
२१ जून	आजोल

ॐ

२२-२३ जून	माणसा
२४ जून	बासण विद्या मंदिर
२५ जून	गांधीनगर
२६ जून	महावीर आराधना केन्द्र
२७ जून से ७ जुलाई	शाहीबाग (अहमदाबाद)
८-१० जुलाई	मणिनगर-कांकरिया
११ जुलाई	पालड़ी
१२ जुलाई	भगीरथ सोसाइटी
१३ जुलाई	नवरंगपुरा
१४ जुलाई	मीठाखली
१५ जुलाई	उस्मानपुरा
१६-१७ जुलाई	साबरमती
१८ जुलाई से २० नवंबर	प्रेक्षा विश्व भारती
२१ नवंबर	हसोल
२२ नवंबर	शाहीबाग
२३ नवंबर	परमेश्वर पार्क
२४ नवंबर	अमराई बाड़ी
२५ नवंबर	असलाली
२६ नवंबर	कनेरा
२७ नवंबर	खेड़ा
२८ नवंबर	संघाणा
२९ नवंबर	डभाण
३० नवंबर	पीपलंग
१ दिसंबर	बोरियावी

ॐ

२ दिसंबर	मोगर
३ दिसंबर	वासद
४ दिसंबर	दशरथ
५ दिसंबर	कारेली बाग (बड़ौदा)
६-८ दिसंबर	मांझलपुर (बड़ौदा)
९ दिसंबर	बामण गांव
१० दिसंबर	सुमेरु नवकार तीर्थ
११ दिसंबर	करजण
१२ दिसंबर	सासरोद
१३ दिसंबर	असुरीया (जैन विहार धाम)
१४ दिसंबर	भरुच
१५-१६ दिसंबर	अंकलेश्वर
१७ दिसंबर	खरोड़
१८ दिसंबर	मिर्जा इस्माइल फार्म
१९ दिसंबर	कीम गांव
२० दिसंबर	धोरड़-पारड़ी
२१-२२ दिसंबर	कामरेज
२३ दिसंबर	उम्भेल
२४ दिसंबर	चलथान
२५ दिसम्बर	पलसाना
२६ दिसंबर	वेस्मा
२७-२८ दिसंबर	नवसारी
२९ दिसंबर	अष्टगांव
३० दिसंबर	चीखली
३१ दिसंबर	डूंगरी